Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ
وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○

(अल् मायदा : 75)

अनुवाद : अतः क्या वे अल्लाह की तरफ़ तवज्जा करते हुए झुकते नहीं और उससे बख़शिश तलब नहीं करते जबकि अल्लाह बहुत ही बख़शने वाला (और) बार-बार रहम करने वाला है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-39

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12 रबीउल अव्वल 1445 हिज्री कमरी, 28 तबूक 1402 हिज्री शम्सी, 28 सितंबर 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए इमारत की तरह है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्सा को मज़बूत करता है

(2445) हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सात बातें करने का हुक्म दिया और सात बातों से मना फ़रमाया। फिर उन्होंने (इन बातों का) वर्णन किया (जिनके करने का हुक्म दिया गया था अर्थात) बीमार की इयादत और जनाज़ों के साथ जाना और छींक मारने वाले का उत्तर देना और सलाम का उत्तर देना और मज़लूम की मदद करना और दावत करने वाले की दावत क़बूल करना और क़सम देने वाले की क़सम पूरी करना।

(2446) हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिए ऐसी इमारत की तरह है जिसका एक हिस्सा दूसरे हिस्सा को मज़बूत करता है और (यह कह कर वज़ाहत के लिए) आपे सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक हाथ की उंगलियों को दूसरे हाथ की उंगलियों में डाला।

(सही बुख़ारी, भाग 4, किताबुल् मज़ालिम, प्रकाशन 2008 कादियान)

★ ★ ★

क़ुरआन शरीफ़ में وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ का इरशाद आया है कि मांगने वाले को मत झिड़क अतः याद रखो कि मांगने वाले को न झिड़को, क्योंकि इस से एक प्रकार की बद-अख़्लाक़ी (अनैतिकता) का बीज बोया जाता है, अख़लाक़ यही चाहता है कि मांगने वाले पर जल्दी नाराज़ न हो

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

मांगने वाले को झिड़कना नहीं चाहिए

कुछ आदमियों की आदत होती है कि मागने वालों को देखकर चिड़ जाते हैं। और अगर कुछ मौलवियत की रग हो तो उस को बजाय कुछ देने के प्रश्न के मसायल समझाने शुरू कर देते हैं और इस पर अपनी मौलवियत का रोब बिठा कर बाज़-औक़ात सख़्त सुस्त भी कह बैठते हैं। अफ़सोस उन लोगों को अक़ल नहीं और सोचने का माद्दा नहीं रखते, जो एक नेक दिल और सलीमुल फ़ितरत इन्सान को मिलता है। इतना नहीं सोचते कि सायल अगर बावजूद सेहत के मांगा करता है तो वह ख़ुद गुनाह करता है। उसको कुछ देने में तो गुनाह लाज़िम नहीं आता, बल्कि हदीस शरीफ़ में لَوْ اَتَاكَ رَاكِبًا के शब्द आए हैं। अर्थात चाहे मांगने वाला सवार हो कर भी आए तो भी कुछ दे देना चाहिए और क़ुरआन शरीफ़ में وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ (अल् ज़ोहा : 11) का इरशाद आया है कि सायल को मत झिड़क। इस में यह कोई सराहत नहीं की गई कि अमुक किस्म के सायल को मत झिड़क और अमुक किस्म के सायल को झिड़क। अतः याद रखो कि सायल को न झड़को, क्योंकि इस से एक किस्म की बदअख़्लाकी का बीज बोया जाता है। अख़लाक़ यही चाहता है कि सायल पर जल्दी नाराज़ न हो। यह शैतान की ख़ाहिश है कि वह इस तरीक़ से तुमको नेकी से वंचित रखे और बदी का वारिस बनादे।

एक नेकी से दूसरे नेकी पैदा होती है।

ग़ौर करो कि एक नेकी करने से दूसरी नेकी पैदा होती है और इसी तरह पर एक बदी दूसरी बदी का कारण हो जाती है। जैसे एक चीज़ दूसरी को आकर्षित करती है इसी तरह ख़ुदा तआला ने ये आपस की कशिश का मसला हर चीज़ में रखा हुआ है। अतः जब सायल से नरमी के साथ पेश आएगा और इस तरह पर अख़लाक़ी सदक़ा दे देगा तो क़बज़ दूर हो कर दूसरी नेकी भी करलेगा और इस को कुछ दे भी देगा।

(मल् फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 480 प्रकाशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

दुनिया की हर चीज़ कोई न कोई फ़ायदा रखती है, कोई भी ऐसी चीज़ नहीं जिसमें कोई फ़ायदा न हो

अफ़सोस कि इस हुक्म से मुस्लमानों ने फ़ायदा उठाना छोड़ दिया और तहक़ीक़ और ईजाद के काम को नज़रअंदाज कर दिया और यूरोप वालों ने बावजूद क़ुरआन-ए-करीम को न मानने के इस हुक्म पर अमल किया और उलूम में इस क़दर तरक़्क़ी की कि सारी दुनिया पर विजय पाई

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत अल् कहफ़ की आयत नंबर : 8 اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

फ़रमाता है कि हम ने दुनिया में हज़ारों चिज़ें पैदा की हैं और उद्देश्य यह है कि इन्सान के लिए एक शुग़ल पैदा करें ता वह इन वस्तुओं को दरयाफ़त करे फिर उनसे काम ले और زِيْنَةً कह कर इस तरफ़ इशारा किया है कि दुनिया की हर चीज़ कोई न कोई फ़ायदा रखती है। कोई भी ऐसी चीज़ नहीं जिसमें कोई फ़ायदा न हो उसी एक शब्द से किस तरह इस नुक्ता को वाज़िह कर दिया गया है कि दुनिया की कोई चीज़ व्यर्थ नहीं अगर بَعْضُهَا زِيْنَةً होता तो ये ख़्याल किया जा सकता था कि कुछ वस्तुएं लाभदयक हैं और कुछ ग़ैर मुफ़ीद परंतु अल्लाह तआला सब वस्तुओं को जो दुनिया पर हैं दुनिया के लिए ज़ीनत का मूजिब क़रार देता है। अतः मालूम हुआ कि इस्लाम के नज़दीक दुनिया की हर शैय में लाभ हैं और वह एक हुस्न अर्थात ख़ूबी अपने अंदर रखती है और कोई चीज़ भी नहीं कि जो दुनिया का हुस्न बढ़ाने वाली न हो अफ़सोस कि इस हुक्म से मुस्लमानों ने फ़ायदा उठाना छोड़ दिया और तहक़ीक़ और ईजाद के काम को नज़रअंदाज कर दिया और यूरोप वालों ने बावजूद क़ुरआन-ए-करीम को न मानने के इस हुक्म पर अमल किया और उलूम में इस क़दर तरक़्क़ी की कि सारी दुनिया पर गालिब आगए।

لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا में इस तरफ़ संकेत किया गया है कि दुनिया की इश्याय इस लिए पैदा की गई हैं ताकि लोग उनके विषय में तहक़ीक़ करें, दुनिया की हालत को सुधारें। उस हिस्से के विषय में मसीहियों से कोताही हुई है। उन्होंने दुनिया के राज़ तो दरयाफ़त किए परंतु अच्छे अमल का उदाहरण न दिखाया अर्थात इस तहक़ीक़ और तदक़ीक़ के नतीजा में उन्होंने दुनिया में ज़ुलम और फ़साद की बुनियाद रख दी और शायद इस तरफ़ इस आयत में इशारा किया गया है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 390 प्रकाशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

गुनाह से सच्ची तौबा करने वाला ऐसा ही है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही नहीं (अल् हदीस)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को अस्तग़फ़ार और तौबा की तरफ़ बार-बार तवज्जा दिलाई है

अगर हम अपने अंदर पाक तबदीली पैदा न करें और हक़ीक़ी तौबा और अस्तग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा न दें तो हमारा अपनी इस्लाह का अह्द करना हमें कुछ लाभ नहीं दे सकता

"रुहानी मुगदर (व्यायाम करने का एक साधन) अस्तग़फ़ार है, इसके साथ रूह को एक शक्ति मिलती है और दिल में धैर्य पैदा होती है, जिसका उद्देश्य ताकत प्राप्त करना हो वह अस्तग़फ़ार करे" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"इस्लाम में तौबा के लिए किसी मज़हब की शर्त नहीं है, प्रत्येक मज़हब की पाबंदी के साथ तौबा क़बूल हो सकती है और केवल वह गुनाह बाक़ी रह जाता है जो कोई शख़्स ख़ुदा की किताब और ख़ुदा के रसूल से मुनकिर रहे" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

अंबिया के अस्तग़फ़ार की भी यही हक़ीक़त है कि वे होते तो मासूम हैं परंतु वे अस्तग़फ़ार इस वास्ते करते हैं कि ताकि भविष्य में उस ताकत का प्रकटन न हो

आजकल दुनिया में जंगी हालात हैं, इन हालात में भी दुनिया को महफ़ूज़ रखने के लिए, अपने आपको महफ़ूज़ रखने के लिए हम अहमदियों को भी बहुत दुआ करनी चाहिए

दिल की दुआएं असली दुआएं होती हैं, जब मूसीबत का समय आने से पहले इन्सान अपने दिल ही दिल में ख़ुदा तआला से दुआएं मांगता रहता है

अस्तग़फ़ार करता रहता है तो फिर ख़ुदावंद रहीम-ओ-करीम से वह बला टल जाती है लेकिन जब बला नाज़िल हो जाती है फिर नहीं टला करती

"आफ़त, मुसीबत चींटियों की तरह इन्सान के साथ लगे हुए हैं उनसे बचने की कोई राह नहीं सिवाए इसके कि सच्चे दिल से तौबा अस्तग़फ़ार में व्यस्त हो जाओ"

अस्तग़फ़ार एक अरबी शब्द है इसके माने हैं अपने गुनाहों की क्षमा मांगना कि हे अल्लाह हमसे पहले जो गुनाह सरज़द हो चुके हैं उनके बुरे परिणामों से हमें बचा क्योंकि गुनाह एक ज़हर है

और इसका असर भी लाज़िमी है और आइन्दा ऐसी हिफ़ाज़त कर कि गुनाह हम से सरज़द ही न हों .. तौबा के अर्थ हैं अफ़सोस और पछतावा से एक बुरे काम से पीछे हटना

"जो शख़्स इन्सान हो कर अस्तग़फ़ार की ज़रूरत नहीं समझता वह बड़ा नास्तिक है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"उबूदियत का रहस्य यही है कि इन्सान खुदा की पनाह के नीचे अपने आपको ले आए, जो खुदा की पनाह नहीं चाहता वह घमंडी और मुतकब्बिर है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

इबादत का मयार हासिल करने के लिए भी अस्तग़फ़ार बहुत ज़रूरी है

जब इन्सान गुनाहों से पीछे हट कर सिदक़-ए-दिल से ख़ुदा तआला की तरफ़ आता है तो ख़ुदा तआला उससे बढ़कर उसकी तरफ़ आता है

अस्तग़फ़ार और तौबा का तभी फ़ायदा है जब बुनियादी आदेशों को भी सामने रख के उनकी सही पैरवी की जाए

नमाज़ों की अदायगी में बाक़ायदगी हो, हुक़ूकुल्लाह (अल्लाह के हकूक)और हुक़ूकुल ईबाद (बंदों के हकूक) की भी सही अदायगी हो

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान से परिपूर्ण इर्शादात की रोशनी में अस्तग़फ़ार और तौबा की हक़ीक़त और लाभ पर बसीरत अफ़रोज़ वर्णन

श्रीमती आनिसा बेगम साहिबा बिंत हज़रत मीर मुहम्मद इसहाक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हु, श्रीमती बुशरा अकरम साहिबा स्यालकोट श्रीमती मुसर्रत जहां साहिबा आफ़ आस्ट्रेलिया और श्रीमान नासिर अहमद क़ुरैशी साहिब आफ़ अमरीका की वफ़ात पर उनका वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 अगस्त 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला अपने बंदे के अस्तग़फ़ार और तौबा क़बूल करने वाला है इस शर्त के साथ कि वह सच्ची तौबा हो, केवल मुँह से अलफ़ाज़ ही न अदा हो रहे हों। क़ुरआन-ए-करीम में इस बात का मुख़्तलिफ़ जगह अल्लाह तआला ने वर्णन फ़रमाया है कि सच्ची तौबा करने वालों को माल-ओ-औलाद से नवाज़ता है (नूह : 13) अज़ाब-ए-इलाही से बचने के लिए एक ज़रीया है। अस्तग़फ़ार करने वाला

अल्लाह तआला की रहमत जज़ब करने वाला बनता है। एक जगह अल्लाह तआला ने अस्तग़फ़ार करने वालों को ख़ुशख़बरी देते हुए फ़रमाया कि لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا (अल् निसा : 65) वह ज़रूर अल्लाह की बहुत तौबा क़बूल करने वाला और बार-बार रहम करने वाला पाते हैं लेकिन शर्त यही है कि हक़ीक़ी अस्तग़फ़ार हो, सच्ची तौबा हो। एक हदीस में आता है। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। वह वर्णन करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि गुनाह से सच्ची तौबा करने वाला ऐसा ही है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही नहीं।

जब अल्लाह तआला किसी इन्सान से मुहब्बत करता है तो गुनाह उसे कोई नुक़्सान नहीं पहुंचा सकता। अर्थात गुनाह के मुहर्रिकात उसे बदी की तरफ़ मायल नहीं कर सकते और बदी के नतायज से अल्लाह तआला उसे महफ़ूज़ रखता है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी कि اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ (अल् बकरः : 223) अल्लाह तआला तौबा करने वालों और पाकीज़गी इख़तेयार करने वालों से मुहब्बत करता है। अर्ज़ किया गया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तौबा की अलामत क्या है। किस तरह पता लगेगा सही तौबा है? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया। अफ़सोस और पछतावा अलामत-ए-तौबा है।

(कंजुल उम्माल, भाग 4 पृष्ठ 261 किताब अल् तौबा, हदीस 10428 प्रकाशन मोअसस रिसाला बेरूत 1985 ई.)

अतः हक़ीक़ी तौबा करने वाला हक़ीक़ी अफसोस और पश्चाताप दिखा कर जहां गुनाहों से पाक होता है वहां उसे अल्लाह तआला की मुहब्बत भी मिलती है। बार-बार अल्लाह तआला के रहम से हिस्सा पाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह सच्ची तौबा करने की शरायत का वर्णन फ़रमाया है। पहली शर्त यह फ़रमाई कि अनियमित विचार और बुरे विचार को छोड़ दे। अतः जो ख़्यालात बद लज़्ज़ात की वजह समझे जा सकते हैं उनको मुकम्मल तौर पर छोड़ दें। ये बहुत बड़ा जिहाद है जो इन्सान को करना चाहिए तभी तौबा की तरफ़ क़दम उठ्ठेगा। दूसरी शर्त यह है कि हक़ीक़ी अफ़सोस और पछतावा ज़ाहिर करे। यह सोचे कि ये लज़्ज़ात और दुनियावी हज़ आरिज़ी चीज़ें हैं और इन्सान की उम्र के साथ साथ हर-रोज़ इस में कमी होती जाती है। तो फिर उसके साथ क्यों इन्सान चिमटा रहे? अतः ख़ुश-क़िस्मत है वे जो इस हक़ीक़त को समझ ले और तौबा करे, हक़ीक़ी पश्चाताप का इज़हार करे। यह हक़ीक़ी पश्चाताप है जिसका आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया है। और तीसरी शर्त यह है कि पक्का इरादा करे कि इन बुराईयों के क़रीब भी नहीं जाएगा। और यहीं रुक नहीं जाना कि बुराईयों के क़रीब न जाने का अह्द कर लिया और बस काफ़ी हो गया बल्कि अख़लाक़ हसना और पाकीज़ा अफ़आल उसकी जगह ले लेंगे। (उद्धृत मल्-फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 138-139, ऐडीशन 1984 ई.) यह है हक़ीक़ी तौबा और यह है हक़ीक़ी पशेमानी और यह वह हालत है जब यह हासिल हो जाए तो ख़ुदा तआला फिर अपने ऐसे बंदों से मुहब्बत करता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अस्तग़फ़ार और तौबा की तरफ़ हमें बार-बार तवज्जा दिलाते हैं।

इन्सान गलतियां करता है और जब ये गलतियां बार-बार दुहराई जाएं तो फिर एक के बाद दूसरे गुनाह में मुबतला करती चली जाती हैं। इसलिए हर वक़त अल्लाह तआला से अस्तग़फ़ार करते हुए, अल्लाह तआला के हुज़ूर झुकते हुए अपने दिलों को हमें पाक करने की कोशिश करनी चाहिए और हमेशा इस फ़िक्र में रहना चाहिए कि कभी हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल-ईबाद ज़ाए न हों।

जैसा कि मैंने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमात को अस्तग़फ़ार और तौबा की तरफ़ बार-बार तवज्जा दिलाई है। आप इतनी फ़िक्र थी कि कोई अवसर ऐसा नहीं आया जब आप जमाअत को इस तरफ़ तवज्जा न दिलाई हो। अपनी मजालिस में अपनी तहरीरात में बार-बार तवज्जा दिलाई। अतः हमारे लिए ये बहुत ज़रूरी है कि अल्लाह तआला और उस के रसूल के अहकाम और इर्शादात की रोशनी में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वर्णन करदा इर्शादात को हमेशा सामने रखकर उन पर अमल करने की कोशिश करें ताकि हक़ बैअत अदा करने वाले बने।

अगर हम अपने अंदर पाक तबदीली पैदा न करें और हक़ीक़ी तौबा और अस्त-ग़फ़ार की तरफ़ तवज्जा न दें तो हमारा अपनी इस्लाह का अह्द करना हमें कुछ फ़ायदा नहीं दे सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहुत जगह तौबा के बारे में वर्णन फ़रमाया है। कुछ इक़तेबासात पेश करता हूँ।

अस्तग़फ़ार का फ़ायदा क्या है? यह वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि وَاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ (हूद : 4) याद रखो कि दो चीज़ें इस उम्मत को अता फ़रमाई गई हैं। एक क़ुव्वत हासिल करने के वास्ते, दूसरी हासिल करदा क़ुव्वत को अमली तौर पर दिखाने के लिए। क़ुव्वत हासिल करने के वास्ते अस्तग़फ़ार है जिसको दूसरे शब्दों में सहायता और मदद भी कहते हैं। अल्लाह तआला से मदद माँगना।"सूफ़ियों ने लिखा है कि जैसे वरज़िश करने से मसलन मगदरों और मोगरियों के उठाने और रफेरने से जस्मानी क़ुव्वत और ताक़त बढ़ती है। वेटलिफ्टिंग करने वाले जो हैं, वेट उठाने वाले हैं, डंबल उठाने वाले हैं, मुख़्तलिफ़ किस्म की वरज़िशें करने वाले हैं, जिस तरह उनके वरज़िश करने से जस्मानी ताक़त बढ़ती है "इसी तरह पर रुहानी मुगदर अस्तग़फ़ार है। इसके साथ रूह को एक क़ुव्वत मिलती है और दिल में इस्तक़ामत पैदा होती है। जिसे क़ुव्वत लेना उद्देश्य हो वे अस्तग़फ़ार करे।"

ताक़त हासिल करनी है तो अस्तग़फ़ार करो। "ग़फ़र ढाँकने और दबाने को कहते हैं। अस्तग़फ़ार से इन्सान इन जज़बात और ख़्यालात को ढांपने और दबाने की कोशिश करता है जो ख़ुदा तआला से रोकते हैं। अतः अस्तग़फ़ार के यही माने हैं कि ज़हरीले मवाद जो हमला करके इन्सान को हलाक करना चाहते हैं उन पर ग़ालिब आए और ख़ुदा तआला के अहकाम की बजा आवरी की राह की रोकों से बच कर उन्हें अमली रंग में दिखाए। यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला ने इन्सान में दो किस्म के तत्त्व रखे हैं। एक सम्मी तत्त्व है "अर्थात ज़हरीला माद्दा" जिसका ग्राहक शैतान है और दूसरा तिरयाक़ी माद्दा है। जब इन्सान तकब्बुर करता है और अपने तईं कुछ समझता है और तिरयाक़ी चशमा से मदद नहीं लेता तो सम्मी ताकत ग़ालिब है।" ज़हरीला माद्दा ग़ालिब आ जाता है।"लेकिन जब अपने तईं ज़लील-ओ-हक़ीर समझता और अपने अंदर अल्लाह तआला की मदद की ज़रूरत महसूस करता है उस वक़्त अल्लाह तआला की तरफ़ से एक चशमा पैदा हो जाता है जिससे उसकी रूह गुदाज़ हो कर बह निकलती है और यही अस्तग़फ़ार के मअनी हैं। अर्थात यह कि इस क़ुव्वत को पा कर ज़हरीले मवाद पर ग़ालिब आ जाए।' हक़ीक़ी अस्तग़फ़ार यह है। "उद्देश्य उसके अर्थ ये हैं कि इबादत पर यूं क़ायम रहो। प्रथम रसूल की इताअत करो। दूसरे हर वक़त ख़ुदा से मदद चाहो। हाँ पहले अपने रब से मदद चाहो। जब क़ुव्वत मिल गई तो تو تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ (हौद : 4) अर्थात ख़ुदा की तरफ़ रुजू करो। (मल्-फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 67-68 ऐडीशन 1984 ई.) अल्लाह की मदद चाहने के लिए भी उससे दुआ करनी पड़ेगी

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ज़ाहिर है कि इन्सान अपनी फ़ित्रत में निहायत कमज़ोर है और ख़ुदा तआला के सदहा अहकाम का उस पर बोझ डाला गया है।"इन्सान कमज़ोर है लेकिन अल्लाह तआला ने बहुत से अहकाम दिए हैं।" अतः उसकी फ़ित्रत में यह दाख़िल है कि वह अपनी कमज़ोरी की वजह से कुछ अहकाम के अदा करने से क़ासिर रह सकता है।' क़ुदरती बात है इतने अहकाम हैं हो सकता है कि सारे अहकाम न अदा कर सके।" और कभी नफ़्स-ए-अम्मारा की कुछ ख़्वाहिशें उस पर ग़ालिब आ जाती हैं। अतः वह अपनी कमज़ोर फ़ित्रत की रो से हक़ रखता है कि किसी लग़्ज़िश के वक़्त यदि वह तौबा और अस्तग़फ़ार करे तो ख़ुदा की रहमत उसको हलाक होने से बचा ले।" हक़ीक़ी तौबा हो, यह कमज़ोरी जो इन्सान की फ़ित्रत में रखी गई है उसकी वजह से इस का हक़ बनता है कि अल्लाह तआला फिर उसकी हक़ीक़ी तौबा को क़बूल करे और उसे बचा ले।"इस लिए यह यक़ीनी अमर है कि अगर ख़ुदा तौबा क़बूल करने वाला न होता तो इन्सान पर यह बोझ सदहा अहकाम का हरगिज़ न डाला जाता। इससे बिलाशुबा साबित होता है कि ख़ुदा तौबा कबूल करने वाला और ग़फ़ूर है और तौबा के ये अर्थ हैं कि इन्सान एक बदी को इस इक़रार के साथ छोड़ दे कि बाद उस के यदि वह आग में भी डाला जाए तब भी वह बदी हरगिज़ नहीं करेगा।" अतः ये शर्त है ऐसी तौबा होनी चाहिए। "अतः जब इन्सान इस सिदक़ और अज़्म-ए-मुहकम के साथ ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करता है तो ख़ुदा अपनी ज़ात में करीम और रहीम है वह इस गुनाह की सज़ा माफ़ कर देता है और यह ख़ुदा की ताआला सिफ़ात में से है कि तौबा क़बूल करके हलाकत से बचा लेता है और अगर इन्सान को तौबा क़बूल करने की उम्मीद न होतो फिर वह गुनाह से बाज़ नहीं आएगा।"

अगर उम्मीद ही नहीं कि तौबा क़बूल होनी है तो फिर वह गुनाह करता चला जाएगा। बहुत सारे लोग प्रश्न करते हैं कि क्या फ़ायदा जब अंजाम ही ऐसा होना है? नहीं। अंजाम के वक़्त से पहले अगर तौबा कर लो तो अल्लाह तआला बचा लेता है। फ़रमाया कि "ईसाई धर्म भी तौबा क़बूल करने का क़ायल है परंतु इस शर्त से कि तौबा क़बूल करने वाला ईसाई हो लेकिन इस्लाम में तौबा के लिए किसी मज़हब की

शर्त नहीं है। प्रत्येक मज़हब की पाबंदी के साथ तौबा क़बूल हो सकती है और केवल वह गुनाह बाक़ी रह जाता है जो कोई शख़्स ख़ुदा की किताब और ख़ुदा के रसूल से मुनकिर रहे और यह बिल्कुल ग़ैर-मुमकिन है कि इन्सान केवल अपने अमल से निजात पा सके बल्कि यह ख़ुदा का एहसान है कि किसी की वह तौबा क़बूल करता है और किसी को अपने फ़ज़ल से ऐसी क़ुव्वत अता करता है कि वह गुनाह करने से सु र -क्षित रहता है।" (चशमा-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 189-190)

एक शख़्स आप अलैहिस्सलाम की मज्लिस में हाज़िर हुआ। उसने पूछा कि मैं क्या वज़ीफ़ा पढ़ा करूँ? फ़रमाया :

"अस्तग़फ़ार बहुत पढ़ा करो। इन्सान की दो ही हालतें हैं। या तो वह गुनाह न करे या अल्लाह तआला उस गुनाह के बद-अंजाम से बचा ले। इसलिए अस्तग़फ़ार पढ़ने के वक़्त दोनों अर्थों को ध्यान में रखना चाहिए।" कि न वह गुनाह करे और न ही गुनाह के बद-अंजाम ज़ाहिर हों। अल्लाह तआला उसे बख़श दे और वह कभी दुबारा गुनाह न करे। यह सामने रखते हुए अस्तग़फ़ार पढ़ना चाहिए।"एक तो यह कि

अल्लाह तआला से पिछले गुनाहों की पर्दापोशी होनी चाहिए और दूसरा यह कि ख़ुदा से तौफ़ीक़ चाहे कि आइन्दा गुनाहों से बचाए परंतु अस्तग़फ़ार केवल ज़बान से पूरा नहीं होता बल्कि दिल से चाहिए। नमाज़ में अपनी ज़बान में भी दुआ माँगो। यह ज़रूरी है।" (मल्-फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 320 ऐडीशन 1984 ई.)

अब मुँह से केवल अस्तग़फ़ार कर लेना या लिख देना कि اَسْتَغْفِرُ اللّٰہَ رَبِّیْ अब भविष्य में गलतियां नहीं होंगी। इस से कुछ फ़ायदा नहीं। जब तक यह साबित करने की कोशिश न हो कि इन्सान उन ग़लतियों की तरफ़ दुबारा कभी नहीं जाएगा जो सरज़द हो चुकी हैं

अस्तग़फ़ार के अर्थ समझाते हुए एक अवसर पर आप फ़रमाया अस्तग़फ़ार के यही अर्थ हैं कि ज़ाहिर में कोई गुनाह सरज़द न हो और गुनाहों के करने वाली क़ुव्वत ज़हूर में न आए। अंबिया के अस्तग़फ़ार की भी यही हक़ीक़त है कि वह होते तो मासूम हैं परंतु वह अस्तग़फ़ार इस वास्ते करते हैं कि ताकि भविष्य में क़ुव्वत ज़हूर में न आए।

और अवाम के वास्ते अस्तग़फ़ार के दूसरे अर्थ भी लिए जावेंगे कि जो जराइम और गुनाह हो गए हैं उनके बुरे परिणामों से ख़ुदा बचाए रखे और उन गुनाहों को माफ़ कर दे और साथ ही आइन्दा गुनाहों से महफ़ूज़ रखे। फ़रमाया बहरहाल यह इन्सान के लिए लाज़िमी बात है वह अस्तग़फ़ार में हमेशा व्यस्त रहे। फ़रमाया ये जो विप-त्तियाँ नाज़िल होती हैं सूखे रूप में या किसी और रूप में उनका अर्थ यही होता है कि लोग अस्तग़फ़ार में व्यस्त हो जाएं।

आजकल दुनिया में जंगी हालात हैं। इन हालात में भी दुनिया को सुरक्षति रखने के लिए, अपने आपको महफ़ूज़ रखने के लिए हम अहमदियों को भी बहुत अस्तग़-फ़ार करना चाहिए।

फ़रमाया परंतु अस्तग़फ़ार का यह मतलब नहीं है कि जो اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ। कहते रहें। असल में ग़ैर मलिक की ज़बान के कारण लोगों से हक़ीक़त छिपी रही है। अरब के लोग तो इन बातों को ख़ूब समझते थे परंतु हमारे मुल्क में ग़ैर ज़बान की वजह से बहुत सी हक़ीक़तें छुपी रही हैं। बहुत से लोग हैं जो कहते हैं कि हमने इतनी दफ़ा अस्तग़फ़ार किया। 100 तस्बीह या हज़ार तस्बीह पढ़ी परंतु जो अस्तग़फ़ार का मतलब और अर्थ पूछो तो बस कुछ नहीं। हक्का बका रह जाऐंगे। इन्सान को चाहिए कि हक़ीक़ी तौर पर दिल ही दिल में माफ़ी मांगता रहे कि वह गुनाह और जरायम जो मुझसे सरज़द हो चुके हैं उनकी सज़ा न भुगतनी पड़े और आइन्दा दिल ही दिल में हर वक़त ख़ुदा तआला से मदद तलब करता रहे कि आइन्दा नेक काम करने की तौफ़ीक़ दे और मासियत से बचाए रखे। फ़रमाया ख़ूब याद रखो कि शब्दों से कुछ काम नहीं बनेगा। अपनी ज़बान में भी अस्तग़फ़ार हो सकता है कि ख़ुदा तआला पिछले गुनाहों को माफ़ करे और आइन्दा गुनाहों से महफ़ूज़ रखे और नेकी की तौफ़ीक़ दे और यही हक़ीक़ी अस्तग़फ़ार है। कुछ ज़रूरत नहीं कि यूंही اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ۔ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ कहता फिरे और दिल को ख़बर तक न हो। याद रखो कि ख़ुदा तक वही बात पहुँचती है जो दिल से निकलती है। अपनी ज़बान में ही ख़ुदा तआला से दुआएं मांगनी चाहिऐं इस से दिल पर भी असर होता है। ज़बान तो सिर्फ दिल की शहादत देती है। अगर दिल में जोश पैदा हो और ज़बान भी साथ मिल जाए तो अच्छी बात है। बग़ैर दिल के सिर्फ ज़बानी दुआएं व्यर्थ हैं। फ़ुज़ूल हैं। हाँ दिल की दुआएं असली दुआएं होती हैं। जब विपत्ति आने से पहले इन्सान अपने दिल ही दिल में ख़ुदा तआला से दुआएं मांगता रहता है, अस्तग़फ़ार करता रहता है तो फिर ख़ुदावंद रहीम-ओ-करीम से वह बला टल जाती है लेकिन जब बला नाज़िल हो जाती है फिर नहीं टला करती।

बला के नाज़िल होने से पहले दुआएं करते रहना चाहिए और बहुत अस्तग़फ़ार करना चाहिए। इस तरह से ख़ुदा बला के वक़्त महफ़ूज़ रखता है। हमारी जमात को चाहिए कि कोई इमतेयाज़ी बात भी दिखाए। अगर कोई शख़्स बैअत करके जाता है और कोई इमतियाज़ी बात नहीं दिखाता। अपनी बीवी के साथ वैसा ही सुलूक है जैसा पहले था और अपने परिजनों से पहले की तरह पेश आता है तोयह अच्छी बात नहीं। अगर बैअत के बाद भी वही बदख़ुल्क़ी और बदसलूकी रही और वही हाल रहा जो पहले था तो फिर बैअत करने का क्या फ़ायदा? चाहिए कि बैअत के बाद ग़ैरों को भी और अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों को भी ऐसा नमूना बन कर दिखावे कि वे बोल उठें कि अब यह वह नहीं रहा जो पहले था और यही हक़ीक़ी अस्तग़फ़ार का नतीजा होना चाहिए।

ख़ूब याद रखो कि साफ़ हो कर अमल करोगे तो दूसरों पर तुम्हारा ज़रूर रोब पड़ेगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कितना बड़ा रोब था। एक दफ़ा काफ़िरों को शक पैदा हुआ कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बद्दुआ करेंगे तो वे सब काफ़िर मिलकर आए और अर्ज़ की कि हुज़ूर बद्दुआ न करें।स च्चे आदमी का ज़रूर रोब होता है। चाहिए कि बिल्कुल साफ़ हो कर अमल किया जाए और ख़ुदा के लिए किया जाए तब ज़रूर तुम्हारा दूसरों पर भी असर और रोब पड़ेगा।

(उद्धृत मल्-फ़ूज़ात, भाग 9 पृष्ठ 372 से 374 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर एक अवसर पर फ़रमाया कि"ख़ुदा तआला से डरना और मुत्तक़ी बनना बड़ी चीज़ है। ख़ुदा उस के ज़रीया से हज़ार आफ़ात से बचा लेता है सिवाए इसके कि ख़ुदा तआला की हिफ़ाज़त उस के शामिल हो कोई नहीं कह सकता कि मुझे विपत्ति नहीं पकड़ेगी और किसी को भी संतुष्टि नहीं होना चाहिए। आफ़ात तो नागहानी तौर से आ जाते हैं। किसी को क्या मालूम कि रात को क्या होगा। लिखा है कि एक-बार आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खड़े हुए। पहले बहुत रोय फिर लोगों को मुख़ातब करके फ़रमाया। یَاعِبَادَاللّٰہ ख़ुदा से डरो। "हे अल्लाह के बंदो! ख़ुदा से डरो।" आफ़त, मुसीबत चींटियों की तरह इन्सान के साथ लगे हुए हैं उनसे बचने की कोई राह नहीं बजुज़ इस के कि सच्चे दिल से तौबा अस्तग़फ़ार में व्यस्त हो जाओ।"

फिर फ़रमाया कि अस्तग़फ़ार के अर्थ ये हैं। मज़ीद वज़ाहत कर रहे हैं कि "..ख़ुदा तआला से अपने पिछले गुनाह और जुर्म की सज़ा से हिफ़ाज़त चाहना और आइन्दा गुनाहों के सरज़द होने से हिफ़ाज़त माँगना। अस्तग़फ़ार अंबिया भी किया करते थे और लोग भी। कुछ नादान पादरियों ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अस्तग़फ़ार पर एतराज़ किया है।" यह उत्तर आप अलैहिस्सलाम दे रहे हैं कि कहते हैं जी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अस्तग़फ़ार किया करते थे। इस का मतलब है वह गुनाह-गार थे। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। फ़रमाया "और लिखा है कि उनके अस्तग़फ़ार करने से नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का गुनहगार होना साबित होता है। ये नादान नहीं समझते कि अस्तग़फ़ार तो एक आला सिफ़त है। इन्सानी फ़ितरतन ऐसा बना है कि कमज़ोरी और थकान उस का फ़ितरी तक़ाज़ा है। अंबिया एस फ़ितरती कमज़ोरी और थकान बशरियत से ख़ूब वाक़िफ़ होते हैं। इसलिए वह दुआ करते हैं कि या इलाही तू हमारी ऐसी हिफ़ाज़त कर कि वह बशरी कमज़ो-रियाँ ज़हूर पज़ीर ही न हों। गफ़ूर कहते हैं ढकने को। असल बात यही है कि जो ताक़त ख़ुदा को है वह न किसी नबी को है न वली को और न रसूल को। कोई दावा नहीं कर सकता कि मैं अपनी ताक़त से गुनाह से बच सकता हूँ। अतः अंबिया भी हिफ़ाज़त के वास्ते ख़ुदा के मुहताज हैं। अतः इज़हार-ए-उबूदियत के वास्ते आँहज़-रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी और अंबिया की तरह अपनी हिफ़ाज़त ख़ुदा तआला से मांगा करते थे।

ये उन लोगों का ख़्याल ग़लत है ईसाई लोग जो कहते हैं नाँ कि ईसा अलैहिस्सलाम अस्तग़फ़ार नहीं करते थे। फ़रमाया कि उनका यह ख़्याल ग़लत है। कि हज़रत ईसा अस्तग़फ़ार न करते थे। यह उनकी बेवक़ूफ़ी और बे समझी है और यह हज़रत ईसा पर तोहमत लगाते हैं। इंजील में ग़ौर करने से सरीह और साफ़ तौर पर मालूम होता है कि उन्होंने जाबजा अपनी कमज़ोरियों का एतराफ़ किया और अस्तग़फ़ार भी किया हज़रत ईसा ने। फ़रमाया कि "अच्छा भला" यह बताओ कि اِیْلِیْ اِیْلِیْ لِمَا سَبَقْتَانِیْ से क्या मतलब? अबी, अबी करके क्यों न पुकारा? इब्रानी में ईल ख़ुदा को कहते हैं। इसके यही माने हैं कि रहम कर और फ़ज़ल कर और मुझे ऐसी बेसर-ओ--सामानी में न छोड़ (अर्थात) मेरी हिफ़ाज़त कर दरहक़ीक़त मुश्किल तो यह है फ़रमाया कि "दरहक़ीक़त मुश्किल तो यह है कि हिंदुस्तान में बाव्जाह इख़तेलाफ़-ए--ज़बान अस्तग़फ़ार का असल उद्देश्य ही मफ़क़ूद हो गया है और उन दुआओं को

एक जंतर मंत्र की तरह समझ लिया है। क्या नमाज़ और क्या अस्तग़फ़ार और क्या तौबा। अगर किसी को नसीहत करो कि अस्तग़फ़ार पढ़ा करो तो वह यही उत्तर देता है कि मैं तो अस्तग़फ़ार की सौ-बार या दो सौ-बार तस्बीह पढ़ता हूँ परंतु मतलब पूछो तो कुछ जानते ही नहीं।

अस्तग़फ़ार एक अरबी लफ़्ज़ है इसके माने हैं तलब-ए-मग़फ़िरत करना कि या इलाही हमसे पहले जो गुनाह सरज़द हो चुके हैं उनके बुरे परिणामों से हमें बचा क्योंकि गुनाह एक ज़हर है और इस का असर भी लाज़िमी है और आइन्दा ऐसी हिफ़ाज़त कर कि गुनाह हमसे सरज़द ही न हों।

सिर्फ ज़बानी तकरार से मतलब हासिल नहीं होता।"फ़रमाया कि "तौबा के माने हैं अफ़सोस और पछतावा से एक बदकाम से रुजू करना। तौबा कोई बुरा काम नहीं है बल्कि लिखा है कि तौबा करने वाला बंदा ख़ुदा को बहुत प्यारा होता है। ख़ुदा तआला का नाम भी तव्वाब है। इस का मतलब यह है कि जब इन्सान अपने गुनाहों और अफ़आल बद से नादिम हो कर पशेमान होता है और आइन्दा इस बदकाम से बाज़ रहने का अह्द करता है तो अल्लाह तआला भी इस पर रुजू करता है रहमत से। ख़ुदा इन्सान की तौबा से बढ़कर तौबा करता है। इसलिए हदीस शरीफ़ में आता है कि अगर इन्सान ख़ुदा की तरफ़ एक बालिशत भर जाता है तो ख़ुदा उस की तरफ़ हाथ भर आता है। अगर इन्सान चल कर आता है तो ख़ुदा तआला दौड़ कर आता है। यानी अगर इन्सान ख़ुदा की तरफ़ तवज्जा करे तो अल्लाह तआला भी रहमत, फ़ज़ल और मग़फ़िरत में इंतेहा-ए-दर्जा का उस पर फ़ज़ल करता है लेकिन अगर ख़ुदा से मुँह फेर कर बैठ जाए तो ख़ुदा तआला को क्या पर्वा।" (मल्-फ़ूज़ात, भाग 10 पृष्ठ 336 से 339 ऐडीशन 1984 ई.)

अस्तग़फ़ार की हक़ीक़त वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "जानना चाहिए कि अल्लाह तआला के क़ुरआन शरीफ़ ने दो नाम पेश किए हैं। अल्-हय्यो और अल्-क़य्यूम। अल्-हय्यो के अर्थ हैं ख़ुद ज़िंदा और दूसरों को ज़िंदगी अता करने वाला। अल्-क़य्यूम। ख़ुद क़ायम और दूसरों के क़ियाम का असली बायस। हर एक चीज़ का ज़ाहिरी बातनी क़ियाम और ज़िंदगी उन्ही दोनों सिफ़ात के तुफ़ैल से है। अतः हय्यो का शब्द चाहता है कि उसकी इबादत की जाए। जैसा कि इस का मज़हर सूरत फ़ातिहा में اِيَّاكَ نَعۡبُدُ है और अल्-क़य्यूम चाहता है कि इस से सहारा तलब किया जाए। इस को اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ के शब्द से अदा किया गया है। हय्यो का शब्द इबादत को इस लिए चाहता है कि उसने पैदा किया और फिर पैदा कर के छोड़ नहीं दिया जैसे उदाहरणतः मुअम्मार "(बिल्डिंग बनाने वाला मेसन) "जिसने इमारत को बनाया है इस के मर जाने से इमारत को कोई हर्ज नहीं है परंतु इन्सान को ख़ुदा की ज़रूरत हर हाल में लाहक़ रहती है। इस लिए ज़रूरी हुआ कि ख़ुदा से ताक़त तलब करते रहें और यही अस्तग़फ़ार है। असल हक़ीक़त तो अस्तग़-फ़ार की यह है। फिर उस को वसीअ कर के उन लोगों के लिए किया गया कि जो गुनाह करते हैं कि उनके बुरे नतायज से महफ़ूज़ रखा जाए।' गुनाह नहीं भी किया तो ज़िंदा रहने के लिए, अल्लाह तआला की पनाह में रहने के लिए भी अस्तग़फ़ार चाहिए।" लेकिन असल यह है कि इन्सानी कमज़ोरियों से बचाया जाए। अतः जो शख़्स इन्सान हो कर अस्तग़फ़ार की ज़रूरत नहीं समझता वह बे-अदब नास्तिक है।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 217 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर एक जगह अस्तग़फ़ार की हक़ीक़त को यूं वर्णन फ़रमाया कि "गुनाह एक ऐसा कीड़ा है जो इन्सान के ख़ून में मिला हुआ है परंतु उस का ईलाज अस्तग़फ़ार से ही हो सकता है।

अस्तग़फ़ार क्या है? यही कि जो गुनाह सादर हो चुके हैं उनके बद समरात से ख़ुदा तआला महफ़ूज़ रखे और जो अभी सादर नहीं हुए और जो ताकत के साथ इन्सान में मौजूद हैं उनके प्रकटन का वक़्त ही न आए और अंदर ही अंदर वे जल भुन कर राख हो जाए

यह वक़्त बड़े ख़ौफ़ का है इस लिए तौबा और अस्तग़फ़ार में व्यस्त रहो।' ये ज़माना जिस से हम गुज़र रहे हैं बड़े ख़ौफ़ का है। तौबा अस्तग़फ़ार में व्यस्त रहो "और अपने नफ़स का अध्यन करते रहो। हर मज़हब-ओ-मिल्लत के लोग और अहल-ए-किताब मानते हैं कि सदक़ात और ख़ैरात से अज़ाब टल जाता है परंतु अज़ाब के प्रकटन पूर्व। परंतु जब नाज़िल हो जाता है तो हरगिज़ नहीं टलता। अतः तुम अभी से अस्तग़फ़ार करो और तौबा में लग जाओ ताकि तुम्हारी बारी ही न आए और अल्लाह तआला तुम्हारी हिफ़ाज़त करे।" (मल्-फ़ूज़ात, भाग 5 पृष्ठ 299 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः आजकल दुनिया के हालात को भी सामने रखकर हमें बहुत अस्तग़फ़ार करनी चाहिए जैसा कि मैंने पहले भी कहा। अल्लाह तआला हमें हर किस्म के उपद्रव और आफ़ात से बचाए।

तौबा की हक़ीक़त की मज़ीद वज़ाहत आप अलैहिस्सलाम ने एक जगह इस तरह फ़रमाई। फ़रमाया कि "याद रहे कि तौबा और मग़फ़िरत से इंकार करना दरहक़ीक़त इन्सानी प्रगति के दरवाज़ा को बंद करना है" तौबा की हक़ीक़त से इंकार करने वाला प्रगति के दरवाज़े को बंद करता है" क्योंकि ये बात तो हर एक के नज़दीक वाज़िह और बदीहीयात से है कि इन्सान कामिल बिलज़ात नहीं।" अर्थात मुकम्मल तौर पर अपनी ज़ात में बिल्कुल कामिल नहीं है"बल्कि तकमील का मुहताज है और जैसा कि वह अपनी ज़ाहेरी हालत में पैदा हो कर आहिस्ता-आहिस्ता अपनी मालूमात वसीअ करता है पहले ही आलिम फ़ाज़िल पैदा नहीं होता। ईसी तरह वह पैदा हो कर जब होश पकड़ता है तो अख़लाक़ी हालत उस की निहायत गिरी हुई होती है इसलिए जब कोई नौ उम्र बच्चों के हालात पर ग़ौर करे तो साफ़ तौर पर उस को मालूम होगा कि अक्सर बच्चे इस बात पर लालची होते हैं कि छोटे छोटे कष्टों के वक़्त दूसरे बच्चा को मारें।"लड़ाईयां होती हैं बच्चों की। "और अक्सर उनसे बात बात में झूठ बोलने और दूसरे बच्चों को गालियां देने की ख़सलत अभ्यर्थी होती है और कुछ को चोरी और चुग़ल-ख़ोरी और हसद और बुख़ल की भी आदत होती है और फिर जब जवानी की मस्ती जोश में आती है तो नफ़स-ए-अम्मारा उन पर सवार हो जाता है और अक्सर ऐसे नालायक़ और नागुफ़्तनी काम उनसे ज़हूर में आते हैं जो सरीह फ़िस्क़ ओ फ़जूर में दाख़िल होते हैं। ख़ुलासा कलाम यह कि अक्सर इन्सानों के लिए अव्वल मरहला गंदी ज़िंदगी है।" माहौल मुआशरा उनको गंदा कर देता है।"और फिर जब सईद इन्सान शुरू की आयु के तुंद सेलाब से बाहर आ जाता है तो फिर वह अपने ख़ुदा की तरफ़ तवज्जा करता है।' सईद फ़ित्रत इन्सान तो जब देखता है कि ये गंद दुनिया में किस तरह फैला हुआ है तो फिर उसकी तवज्जा ख़ुदा तआला की तरफ़ होती है और तवज्जा होने के नतीजा में क्या होता है कि "और सच्ची तौबा करके नाकर्दनी बातों से किनारा-कश हो जाता है।" फिर वह तौबा करता है "और अपने फ़ित्रत के जामा को पाक करने की फ़िक्र में लग जाता है। यह आम तौर पर इन्सानी ज़िंदगी का सवानेह हैं जो नौ इन्सान को तै करने पड़ते हैं। अतः इस से ज़ाहिर है कि अगर यही बात सच्च है कि तौबा क़बूल नहीं होती तो साफ़ साबित होता है कि ख़ुदा का इरादा ही नहीं कि किसी को निजात दे।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 192-193)

एक अवसर पर जबकि कुछ लोग आए थे, उन्होंने बैअत की, मज्लिस जमी हुई थी तो उनको आप अलैहिस्सलाम ने नसीहत फ़रमाई। फ़रमाया कि"ख़ुदा तआला का मंशा है कि इन्सान स्पष्ट रूप में तौबा करे और दुआ करे कि उस से गुनाह सरज़द न हो। न आख़िरत में रुस्वा हो न दुनिया में।" ऐसी तौबा हो कि दुनिया में भी रुस्वाई न हो और मरने के बाद भी रुस्वाई न हो। फ़रमाया कि "जब तक इन्सान समझ कर बात न करे और रोना गिड़गिड़ाना उस में न हो तो ख़ुदा तक वह बात नहीं पहुँचती।

सूफ़ियों ने लिखा है कि अगर चालीस दिन गुज़र जाए और ख़ुदा की राह में रोना न आए तो दिल सख़्त हो जाता है तो सख़्ती क़लब का कफ़्फ़ारा यही है कि इन्सान रोवे। इस के लिए कारण होते हैं। इन्सान नज़र डाल कर देखे कि उसने क्या बनाया है और उसकी आयु का क्या हाल है। अन्य गुनाहों पर नज़र डाले।" गुज़रे हुए हालात जो हैं उनमें बहुत सारे तकलीफ़-दह हालात भी हैं उन पर नज़र डाले।"फिर इन्सान का दिल कांपती हुई वित्र की तरह होता है। जो शख़्स दावा से कहता है कि मैं गुनाह से बचता हूँ वह झूठा है। जहां शीरीनी होती है वहां च्यूंटियां ज़रूर आती हैं। इसी तरह नफ़स के तक़ाज़े तो साथ लगे ही हैं उनसे निजात क्या हो सकती है? ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और रहमत का हाथ न हो तो इन्सान गुनाह से नहीं बच सकता न कोई नबी न वली और न उनके लिए यह फ़ख़र का मुक़ाम है कि हमसे गुनाह सरज़द नहीं होता बल्कि वे हमेशा ख़ुदा तआला का फ़ज़ल मांगते थे और नबियों के अस्तग़फ़ार का मतलब यही होता है कि ख़ुदा तआला के फ़ज़ल का हाथ उन पर रहे अन्यथा अगर इन्सान अपने नफ़स पर छोड़ा जाए तो वह हरगिज़ मासूम और महफ़ूज़ नहीं हो सकता। اَللّٰهُمَّ بَاعِدۡ بَيۡنِيۡ وَبَيۡنَ خَطَايَايَ और दूसरी दुआएं भी अस्तग़फ़ार के इसी मतलब को बतलाती हैं। उबूदियत का रहस्य यही है कि इन्सान खुदा की पनाह के नीचे अपने आप को ले आवे। जो खुदा की पनाह नहीं चाहता वह मग़रूर और मुत-कब्बिर है।" (मल्-फ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 21 ऐडीशन 1984 ई.)

आप अलैहिस्सलाम से "किसी ने पूछा कि इबादत में ज़ौक़ शौक़ किस तरह पैदा होता है?"

अब भी लोग बहुत से सवाल पूछते हैं। "फ़रमाया आमाल-ए-सालेहा और इबादत में ज़ौक़ शौक़ अपनी तरफ़ से नहीं हो सकता। यह ख़ुदा तआला के फ़ज़ल और तौफ़ीक़ पर मिलता है। इसके लिए ज़रूरी है कि इन्सान घबराए नहीं और ख़ुदा

तआला से उसकी तौफ़ीक़ और फ़ज़ल के वास्ते दुआएं करता रहे।" इबादत का ज़ौक़ शौक़ भी अल्लाह तआला से मांगे।"और उन दुआओं मैं थक न जाए। जब इन्सान इस तरह पर मुस्तक़िल मिज़ाज हो कर लगा रहता है तो आख़िर ख़ुदा तआला अपने फ़ज़ल से वे बात पैदा कर देता है जिस के लिए उस के दिल में तड़प और बेकरारी होती है।" इबादत के ज़ौक़ शौक़ की तड़प और बेकरारी है तो फिर मुस्तक़िल मिज़ाजी से लगे रहो, आख़िर वे हालत पैदा हो जाती है।" अर्थात इबादत के लिए एक ज़ौक़ और शोक और हलावत पैदा होने लगती है लेकिन अगर कोई शख़्स मुजाहिदा और कोशिश न करे।" कोशिश ही नहीं की, मुजाहिदा नहीं किया "और वह यह समझे कि फूंक मार कर कोई कर दे। यह अल्लाह तआला का क़ायदा और सुन्नत नहीं। इस तरीक़ पर जो शख़्स अल्लाह तआला को आज़माता है वह ख़ुदा तआला से हंसी करता है और मारा जाता है।

ख़ूब याद रखो कि दिल अल्लाह तआला ही के हाथ में है। उस का फ़ज़ल न हो तो दूसरे दिन जा कर ईसाई हो जाए या किसी और बेदीनी में मुबतला हो जाए। इस लिए हर वक़त उसके फ़ज़ल के लिए दुआ करते रहो और उसकी मदद चाहो ताकि सद मार्ग पर तुम्हें क़ायम रखे। जो शख़्स ख़ुदा तआला से दूर होता है वह शैतान का हो जाता है। इस के लिए ज़रूरी है कि इन्सान अस्तग़फ़ार करता रहेता कि वह ज़हर और जोश पैदा न हो जो इन्सान को हलाक कर देता है।"

(मल्-फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 154-155 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः इबादत का मयार हासिल करने के लिए भी अस्तग़फ़ार बहुत ज़रूरी है। फिर इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि ख़ुदा तआला के अज़ाब से बचने का गुण किया है, आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "तौबा अस्तग़फ़ार करनी चाहिए" ये गुण है।" बग़ैर तौबा अस्तग़फ़ार के इन्सान कर ही क्या सकता है। सब नबियों ने यही कहा है कि अगर तौबा अस्तग़फ़ार करोगे तो ख़ुदा बख़्श देगा। इसलिए नमाज़ें पढ़ो और आइन्दा गुनाहों से बचने के लिए ख़ुदा तआला से मदद चाहो और पिछले गुनाहों की माफ़ी माँगो और बार-बार अस्तग़फ़ार करो ताकि जो क़ुव्वत गुनाह की इन्सान की फ़ित्रत में है वह ज़हूर में न आए। इन्सान की फ़ित्रत में दो तरह की प्रतिभा पाई जाती है एक तो कसब-ए-ख़ैरात और नेक कामों के करने की क़ुव्वत है और दूसरे बुरे कामों को करने की क़ुव्वत और ऐसी क़ुव्वत को रोके रखना यह ख़ुदा तआला का काम है और यह क़ुव्वत इन्सान के अंदर इस तरह से होती है जिस तरह कि पत्थर में एक आग की क़ुव्वत होती है।" (मल्-फ़ूज़ात, भाग 9 पृष्ठ 372 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर फ़रमाया "وَاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ"(हूद : 4) याद रखो कि दो चीज़ें इस उम्मत को अता फ़रमाई गई हैं। एक क़ुव्वत हासिल करने के वास्ते "अस्त-ग़फ़ार करो" दूसरी हासिल करदा क़ुव्वत को अमली तौर पर दिखाने के लिए। तौबा करते हुए उसकी तरफ़ रुजू करो।"क़ुव्वत हासिल करने वाला अस्तग़फ़ार है। जिसको दूसरे शब्दों में सहायता और मदद भी कहते हैं। सूफ़ियों ने लिखा है कि जैसे वरज़िश करने से' जिस तरह पहले भी वर्णन हुआ था "उदाहरणतः मुगदरों और मोगरियों के उठाने और फेरने सेशारीरिक शक्ति और ताक़त बढ़ती है इसी तरह पर रुहानी मुगदर अस्तग़फ़ार है। इसके साथ रूह को एक शक्ति मिलती है और दिल में इस्तिक़ामत पैदा होती है। जिसे क़ुव्वत लेनी मतलूब हो वह अस्तग़फ़ार करे।' (मल्-फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 67-68 ऐडीशन 1984 ई.)

फ़रमाया कि "ख़ुदा तआला के फ़ज़ल-ओ-करम का दरवाज़ा कभी बंद नहीं होता। इन्सान अगर सच्चे दिल से इख़लास लेकर रुजू करे तो वह ग़फ़ूर रहीम है और तौबा को क़बूल करने वाला है। यह समझना कि किस-किस गुनहगार को बख़्शेगा, ख़ुदा तआला के हुज़ूर सख़्त गुस्ताख़ी और बे-अदबी है। उसकी रहमत के खज़ाने वसीअ और असीमित हैं। उसके हुज़ूर कोई कमी नहीं। उसके दरवाज़े किसी पर बंद नहीं होते। अंग्रेज़ों की नौकरियों की तरह नहीं कि इतने तालीम याफ़ता को कहाँ से नौकरियां मिलीं। ख़ुदा के हुज़ूर जिस क़दर पहुंचें गे सब आला मदारिज पाएँगे। यह यक़ीनी वाअदा है। वह इन्सान बड़ा ही बदक़िस्मत और बद-बख़्त है जो ख़ुदा तआला से मायूस हो और उसकी नज़ा का वक़्त ग़फ़लत की हालत में इस पर आ जाए। बेशक उस वक़्त दरवाज़ा बंद हो जाता है (मल्-फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 296-297 ऐडीशन 1984 ई.) जब आख़िर मरने का वक़्त आया फिर कोइ नहीं।

फिर फ़रमाया कि वाज़ेह हो कि तौबा लुग़त-ए-अरब में रुजू करने को कहते हैं। इसी वजह से क़ुरआन शरीफ़ में ख़ुदा तआला का नाम भी तव्वाब (तौबा स्वीकार करने वाला) है यानी बहुत रुजू करने वाला। इस के अर्थ ये हैं कि जब इन्सान गुनाहों से दस्तबरदार हो कर सिदक़-ए-दिल से ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करता है तो ख़ुदा तआला उस से बढ़कर उस की तरफ़ रुजू करता है और यह बात पूर्णतः कानून-ए-क़ुदरत के मुताबिक़ है क्योंकि जबकि ख़ुदा तआला ने नौ-ए-इन्सान की फ़ित्रत में यह बात रखी है कि जब एक इन्सान सच्चे दिल से दूसरे इन्सान की तरफ़ रुजू करता है तो उस का दिल भी इस के लिए नरम हो जाता है तो फिर अक़ल क्योंकर इस बात को क़बूल कर सकती है कि बंदा तो सच्चे दिल से ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करे परंतु ख़ुदा उसकी तरफ़ रुजू न करे बल्कि ख़ुदा जिसकी ज़ात निहायत करीम-ओ--रहीम वाक़्य हुई है वे बंदे से बहुत ज़्यादा उस की तरफ़ रुजू करता है। ईसीलिए कुरान-ए-शरीफ़ में ख़ुदा तआला का नाम जैसा कि मैंने अभी लिखा है तव्वाब (तौबा स्वीकार करने वाला) है अर्थात बहुत रुजू करने वाला। अतः बंदे का रुजू तो अफसोस और पश्चाताप, तज़ल्लुल और इनकेसार के साथ होता है और ख़ुदा तआला का रुजू रहमत और मग़फ़िरत के साथ। अगर रहमत ख़ुदा तआला की सिफ़ात में से न हो तो कोई मुख़लिसी नहीं पा सकता। अफ़सोस कि इन लोगों ने ख़ुदा तआला की सिफ़ात पर ग़ौर नहीं किया और समस्त निर्भरता अपने कार्य और कर्म पर रखा है परंतु वह ख़ुदा जिसने बग़ैर किसी के अमल के हज़ारों नेअमतें इन्सान के लिए ज़मीन पर पैदा कीं क्या उसका ये ख़लक़ हो सकता है कि इन्सान ज़ईफ़-उल-बुनयान जब अपनी ग़फ़लत से मुतनब्बा हो कर उस की तरफ़ रुजू करे और रुजू भी ऐसा करे कि गोया मर जाए और पहला नापाक चोला अपने बदन पर से उतार दे और उस की आतिश--ए-मुहब्बत में जल जाए तो फिर भी ख़ुदा उसकी तरफ़ रहमत के साथ तवज्जा न करे। क्या उस का नाम-ए-ख़ुदा का कानून-ए-क़ुदरत है? नहीं। जो ये कहता है उस पर लानत है अल्लाह की। (उद्धृत चशमा-ए-मार्फ़त, रुहानी खज़ायन भाग 23 पृष्ठ 133-134)

अपनी ज़िंदगीयों में नुमायां तबदीली पैदा करने की तरफ़ तवज्जा दिलाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "ख़ूब याद रखो कि अल्लाह तआला को छोड़कर दवा और तदबीर पर भरोसा करना बेवकूफी है। अपनी ज़िंदगी में ऐसी तबदीली पैदा कर लो कि मालूम हो कि गोया नई ज़िंदगी' अस्तग़फ़ार की ज़िंदगी' 'है। अस्तग़फ़ार की कसरत करो। जिन लोगों को सांसारिक कार्यों की व्यस्तता के कारण कम फ़ुर्सती है उनको सबसे ज़्यादा डरना चाहिए।" दुनिया के कामों में व्यस्त होने की वजह से जो कहते हैं कि बहुत कम वक़्त मिलता है उन्हें बहुत डरना चाहिए।" मुलाज़मत पेशा लोगों से अक्सर फ़रायज़-ए-ख़ुदावंदी फ़ौत हो जाते हैं इसलिए मजबूरी की हालत में ज़ोहरो अस्र और मग़रिब-ओ-इशा की नमाज़ों का जमा कर के पढ़ लेना जायज़ है।' बहुत मजबूरी है तो जमा कर के पढ़ लो लेकिन असल यही है कि अपने वक़्त पर नमाज़ें अदा की जाएं। फ़रमाया "मैं यह भी जानता हूँ कि अगर हुक्काम से नमाज़ पढ़ने की इजाज़त तलब कर ली जाए तो वह इजाज़त दे दिया करते हैं।"जो नौकर पेशा लोग हैं फ़रमाया कि अफ़सरों से अगर मुस्लमान नहीं भी हैं कहो, उनसे इजाज़त लो तो नमाज़ पढ़ने की इजाज़त मिल जाती है।".. तर्क-ए-नमाज़ के लिए ऐसे बे-जा उज़्र बजुज़ अपने नफ़्स की कमज़ोरी के और कोई नहीं। हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल--ईबाद में ज़ुलम-ओ-ज़्यादती न करो। अपने फ़रायज़ मंसबी निहायत दियानतदारी से बजा लाओ।" (मल्-फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 265 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः अस्तग़फ़ार और तौबा का तभी फ़ायदा है जब बुनियादी अहकामात को भी सामने रख के उनकी सही पैरवी की जाए। नमाज़ों की अदायगी में बाक़ायदगी हो। हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद की भी सही अदायगी हो।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "अतः उठो और तौबा करो और अपने मालिक को नेक कामों से राज़ी करो और याद रखो कि एटेक़ादी ग़लतियों की सज़ा तो मरने के बाद है और हिंदू या ईसाई या मुस्लमान होने का फ़ैसला तो क़ियामत के दिन होगा। लेकिन जो शख़्स ज़ुलम और ताअद्दी और फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर में हद से बढ़ता है उस को उसी जगह सज़ा दी जाती है। तब वह ख़ुदा की सज़ा से किसी तरह भाग नहीं सकता। अतः अपने ख़ुदा को जल्द राज़ी कर लो .. वह निहायत दर्जा करीम है। एक दम की गुदाज़ करने वाली तौबा से सत्तर बरस के गुनाह बख़श सकता है और यह मत कहो कि तौबा मंज़ूर नहीं होती। याद रखो कि तुम अपने आमाल से कभी बच नहीं सकते। हमेशा फ़ज़ल बचाता है न आमाल।" इसलिए अल्लाह तआला के हुज़ूर झुको और उस का फ़ज़ल मांगते रहो अस्तग़फ़ार करते रहो। फिर फ़रमाया कि "हे ख़ुदा ए करीम-ओ-रहीम हम सब पर फ़ज़ल कर कि हम तेरे बंदे और तेरे आस्ताना पर गिरे हैं। आमीन"

(लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 174)

अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ का वारिस बनाए और हम तौबा के हक़ीक़ी मफ़हूम को समझते हुए अस्तग़फ़ार की हक़ीक़त को समझते हुए अस्तग़फ़ार और तौबा करने वाले हों।

अब मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा और बाद में उनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा। उनमें से पहला वर्णन है श्रीमती आनिसा बेगम साहिबा का। जो हज़रत मीर मुहम्मद

इसहाक़ साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी थीं। 93 वर्ष की आयु में पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। कादियान में पैदा हुईं। हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब उनके दादा थे। उनकी वालिदा का नाम हज़रत सालेहा बेगम साहिबा पुत्री पीर मंज़ूर मुहम्मद साहिब था। इबतेदाई तालीम उन्होंने कादियान से हासिल की। अल्लाह तआला ने उनको दो बेटे और एक बेटी से नवाज़ा। क़ाज़ी शौकत साहिब मरहूम से उनकी शादी हुई थी।

मीर महमूद अहमद साहिब नासिर रबवाह से अपनी बहन के बारे में लिखते हैं कि निहायत दर्जा सादा बिल्कुल बे-ज़रर, बे-शरर। शादी से पहले सारे ख़ानदान की ख़िदमत करने वाली हमारी बहन थीं। कहते हैं रब्वाह के इबतेदाई दिनों में जब यहां बिजली नहीं थी। गर्मी शदीद पड़ती थी। कच्चे मकानों में रहते थे और कहते हैं हम गर्मी से बचाओ के लिए एक कमरे में इकट्ठे हो जाते थे। वहां छत पर एक बड़ा सारा झालर वाला पंखा लगा हुआ था जिसको रस्सी पकड़ के हिलाया करते थे और ये बग़ैर किसी के कहे के हमारे आराम की ख़ातिर बाहर बैठ कर रस्सी हिलाती रहती थीं ताकि हम आराम से सोए रहें। उनमें सबकी ख़िदमत की बेलौस भावना थी।

उनके बच्चे लिखते हैं कि हमारी वालिदा निहायत मुख़लिस अहमदी मुस्लमान थीं। हुक़ूक़-ओ-फ़रायज़ अदा करने वाली बीवी थीं। मिज़ाज बहुत सादा और प्यार करने वाला था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खलिफ़ा और सहाबा के निहायत अहम और पुरमग़ज़ वाक़ियात बहुत ही सादा अंदाज़ में वर्णन किया करती थीं। जमाअत की तारीख़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप खलिफ़ा और सहाबा के वाक़ियात भी निहायत आसानी से वर्णन कर दिया करती थीं। बच्चों को और लोगों को आम तौर पर इस बात की नसीहत किया करती थीं कि ईमान पर क़ायम रहो और पुरवक़ार ज़िंदगी बसर करो। जमाअती कामों में बहुत फ़आल रुकन थीं। सबसे बड़ी ख़ूबी आपकी इन्सानियत के लिए शफ़क़त थी। तब्लीग़ का भी बहुत शौक़ था यहां तक कि आप एयरपोर्ट के टर्मीनल पर एयर लाईन के पायलट समेत सबको इस्लाम की दावत दिया करती थीं। आपके अख़लाक़ में ख़ूबसूरती और सादगी शामिल थी। तक़रीर में बहुत उम्दागी थीं। उनकी भांजी अमतुल काफ़ी साहिबा हैं। वह कहती हैं कि अपने माता पिता से जो बुनियादी तर्बीयत पाई वह इतनी मज़बूत थी कि कभी इस से टस से मस नहीं हुईं। दीन की ख़िदमत का जज़बा इस क़दर था कि न्यूयार्क जैसे शहर में बाक़ायदा मस्जिद जा कर मस्जिद की सफ़ाई किया करती थीं। लोग ये बताते हैं कि जब तक हिम्मत रही सौदा लेने के वक़्त आम लोगों को अपनी समझ और ज़बान के मुताबिक़ तब्लीग़ किया करती थीं। ग़रीबों और मजबूरों के लिए दिल में हमदर्दी और मुहब्बत का एक तूफ़ान मचा रहता था। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

दूसरा जनाज़ा श्रीमती बुशरा अकरम साहिबा स्यालकोट का है। उनकी भी पिछले दिनों में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। 1955 ई. में भडाल ज़िला स्यालकोट में पैदा हुईं। मरहूमा नेक मुत्तक़ी और नमाज़ क़ुरआन की पाबंद एक मुख़लिस महिला थीं। मेहमान-नवाज़ी, ग़रीबपरवरी और ख़िलाफ़त से मुहब्बत उनकी नुमायां खूबियां थीं। वाकफ़ीन-ए-ज़िंदगी की बहुत इज़्ज़त करती थीं। पीछे रहने वालों में पति के अतिरिक्त एक बेटा और तीन बेटियां शामिल हैं। उनके बेटे बाबर शहज़ाद साहिब मुरब्बी सिलसिला हैं। सैरालियून में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और वहां मैदान-ए-अमल में होने की वजह से उनके जनाज़े में भी शामिल नहीं हो सके।

बाबर शहज़ाद साहिब मुरब्बी सिलसिला लिखते हैं कि मेरा जामिआ में दाख़िला हुआ तो बहुत ख़ुश हुईं। उन्होंने पूछा कि तुमसे क्या सवाल पूछा था। कहते हैं उन्होंने जामिआ में जो सवाल किया था कि तुम अकेले बेटे हो अगर तुमने वक़्फ़ कर दिया तो माता पिता का कफ़ील कौन होगा। तो कहते हैं कि मैंने तो जो उत्तर देना था दिया लेकिन माता ने यह सुनके कहा कि अगर मेरे सात बेटे होते तो मैं सबको वक़्फ़ कर देती। कहते हैं आख़िरी दिनों में जब हस्पताल में दाख़िल थीं। मैं ने फ़ोन किया और पूछा आप कैसी हैं? तो बावजूद बड़ी तकलीफ़ के उन्होंने यही कहा कि ठीक हूँ और डाक्टर की हिदायत के मुताबिक़ सब खा पी रही हूँ लेकिन साथ यह भी कहा कि अगर मुझे कुछ हो गया तो परेशान ना होना और उधर ही रहना, तुम अफ़्रीक़ा में हो वहीं रहना। बच्चों को परेशान न करना। तुम वक़्फ़-ए-ज़िंदगी हो इसलिए सब्र करना और कहते हैं यही मेरी वालिदा के आख़िरी शब्द थे। ग़रीबों और ज़रूरतमंदों और विधवाओं का ख़्याल रखतीं और उनकी माली मदद किया करती थीं। जब भी गंदुम या चावल की फ़सल आती तो उस को कई हिस्सों में तक़सीम करतीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को भी सब्र फ़रमाए।

तीसरा वर्णन मुसर्रत जहां साहिबा पत्नी चौधरी मुहम्मद अख़तर साहिब आस्ट्रेलिया का है। उनकी भी पिछले दिनों सतासी साल की आयु में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके दादा हज़रत बाबू मुहम्मद अफ़ज़ल औजलवी साहिब सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम थे। उनके ज़ेर-ए-साया उन्होंने तर्बीयत पाई। उनको ब्रेन हैम्बरज हो गया था। पिछले सोला साल से इसी वजह से बैड पर पड़ी रहीं। उनके बच्चों ने, एक बेटे ज़ाहिद ने और बहू ने उनकी ख़ास ख़िदमत की। बहू कहती हैं कि जिस तरह उन्होंने अपनी एक्टिव (active) ज़िंदगी में मेरे से हमेशा सुलूक रखा वह सास नहीं थीं बल्कि बेटी की तरह सुलूक रखा। नमाज़, रोज़ा, तहज्जुद की पाबंद थीं। इबादत का ख़ास एहतेमाम किया करती थीं। अपने घर में भी इबादत के लिए अलैहदा जगह बनाई हुई थी और दारूल उलूम से मस्जिद मुबारक में जब दर्स हुआ करता था तो पैदल दर्स सुनने जाया करती थीं और बल्कि आख़िरी अशरे में तरावीह के लिए भी जाया करती थीं। ख़िलाफ़त से बेहद अक़ीदत और एहतेराम का ताल्लुक़ था। उनके पति रेलवे में स्टेशन मास्टर थे। जहां भी उनकी पोस्टिंग होती वहां अपने घर में बच्चों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने की क्लास लगाया करती थीं। रब्वाह में जब सुकूनत इख़तेयार की तो वहां भी क़ुरआन-ए-करीम की क्लास का एहतेमाम किया। उनके पीछे रहने वालों में मैं मियां के इलावा तीन बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। उनके छोटे बेटे हाफ़िज़ राशिद जावेद साहिब नाज़िम दारुल क़ज़ा रब्वाह हैं, वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी जो नेकियां हैं उनको उनके बच्चों को भी जारी रखने की तौफीक दे।

चौथा वर्णन है श्रीमान नासिर अहमद क़ुरैशी साहिब अमरीका का। उनकी भी पिछले दिनों 88 वर्ष की उम्र में वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अमतुल बारी नासिर साहिबा के यह शौहर थे जो कि लंबा अरसा लजना इमाइल्लाह कराची की सैक्रेटरी इशाअत रही हैं। पीछे रहने वालों में में पत्नी के इलावा दो बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं। उनका एक नवासा वक्क़ास ख़ुरशीद मुरब्बी है और एक पोता उनका जामिआ अहमदिया कैनेडा में पढ़ रहा है। उनके वालिद का नाम श्रीमान मुहम्मद शम्सुद्दीन भागलपूरी साहिब था और उनके ख़ानदान में अहमदीयत 1913 ई. में आई जब मुहतरम मौलवी अब्दुल माजिद साहिब वालिद हज़रत सय्यदा सारा बेगम साहिबा हर्म हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस इलाक़े में एक जलसा किया और सदाक़त मसीह मौऊद के दलायल वर्णन किए। उनके वालिद साहिब बहुत प्रभावित हुए। स्टेज पर जा कर मुलाक़ात की। लिटरेचर दिया गया जिसे पढ़ कर अहमदीयत के लिए जोश पैदा हुआ। उन्होंने दुआएं कीं। अल्लाह तआला ने एक ख़ाब में हज़रत अकदस की चहरा मुबारक और मुबश्शिर ख़्वाबें दिखाई। इसलिए हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु को बैअत का ख़त लिख दिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की बैअत की। इस तरह भागलपुर के अव्वलीन अहमदियों में शामिल हुए। शदीद मुख़ालेफ़त की वजह से अपने बीवी बच्चों के साथ हिज्रत करके कादियान आ गए और वहां इख़लास-ओ-मुहब्बत में तरक़्क़ी करते चले गए। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के कार ड्राईवर के तौर पर भी उनको ख़िदमत की तौफीक मिली।

नासिर क़ुरैशी साहिब कादियान में पैदा हुए थे। पार्टीशन के बाद कराची में रिहायश इख़तेयार की। यहीं तालीम पाई। बड़ी मेहनत और लगन से कठिन हालात के बावजूद पढ़ते रहे। बी ए इलैक्ट्रीकल इंजनीयरिंग की और फिर उसके बाद अपने महकमा टेलीफ़ोन में मुलाज़मत इख़तेयार की। जनरल मैनेजर के ओहदे तक तरक़्क़ी की। मुलाज़मत से रिटायर्ड हुए तो बड़े मेहनती और ईमानदार अफ़्सर की शौहरत के साथ रिटायरमैंट हासिल की। जमाअत अहमदिया कराची के हलक़ा नाज़िम आबाद में सदर हलक़ा और जहां भी रहे दूसरी जगह में भी सदर के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

उनकी अपत्नी अम्तुल् बारी साहिबा लिखती हैं कि हमेशा उनको मैंने नमाज़ क़ुरआन का पाबंद पाया। मस्जिद में दिल अटका रहता था। ज़िम्मेदार शौहर, बच्चों की तालीम-ओ-तर्बीयत का बहुत ख़्याल रखने वाला पाया। ज़रूरतमंदों की मदद की तौफ़ीक़ उनको मिलती थी। ख़िलाफ़त से वालहाना मुहब्बत करने वाले थे। साफ़ सीधी सच्ची और खरी बात कहते थे और ख़ुदा के फ़ज़ल से मूसी थे। अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

महत्वपूर्ण सूचना

नूर हस्पताल क़ादियान में ऐक्सरे (X-Ray) टेक्नीशियन की ज़रूरत है

शर्तें

(1) प्रत्याशी की आयु 37 वर्ष से अधिक न हो (2) प्रत्याशी ने किसी सरकारी या रजिस्टर्ड विभाग से एक्स-रे टेक्नीशन का कोर्स किया हो और ऐसे कोर्स को Paramedical Council of Punjab मानता हो (3) डॉक्टर का निर्देश पढ़ने के लिए अंग्रेज़ी अच्छी पढ़ना जानता हो (4) अनुभव रखने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी (5) सप्ताहिक अख़बार बदर में प्रकाशित आख़िरी सूचना के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगे उन्हीं पर ग़ौर होगा (6) इच्छा रखने वाले प्रत्याशी अपने निवेदन प्रकाशित फ़ार्म पर अपने ज़िला अमीर स्थानीय अमीर/ सदर जमाअत/ मुबल्लिग़ इंचार्ज के हस्ताक्षर मोहर के साथ भिजवा सकते हैं (7) इंटरव्यू में सफ़लता की सूरत में उम्मीदवार को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकतस्क जांच करवानी होगी और सिर्फ वही उम्मीदवार ख़िदमत के योग्य होगा जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहत मंद और तंदरुस्त होगा (8) स्लैक्शन की सूरत में प्रत्याशी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा (9) सफ़र ख़र्च क़ादियान आने जाने और मैडीकल के समस्त अख़राजात प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे (10) मज़कूरा असामी के लिए कोइ फ़ार्म नज़ारत दीवान से हासिल कर सकते हैं (11) प्रत्याशी जब इंटरव्यू के लिए तशरीफ़ लाएंगे तो अपनी असल तालीमी प्रामाणिकताएं अपने साथ ज़रूर लाएंगे

नोट:-लिखित परीक्षा साक्षात्कार की तिथि से प्रत्याशी उनको बाद में अवगत किया जाएगा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड143516-

मोबाइल : 09646351280 / 09682587713 दफ़्तर 01872-501130

E-mail: diwan@qadian.in

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। संस्थान

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

ने बताया कि तौहीद पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का लिटरेचर बहुत ही कमाल का लिटरेचर है। ग़ैर अहमदी उल्मा यह स्वीकार करते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी एक बेनज़ीर मुनाज़िर थे। उन्होंने आर्यों और ईसाइयों से बड़े बड़े मुनाज़रे किए और फ़तह हासिल की। सवाल यह पैदा होता है कि क्या अंग्रेज़ों ने मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम को इस लिए खड़ा किया था कि आप अलैहिस्सलाम पादरियों और शोर मचाने वालों को खुली खुली शिकस्त दें और उनके मज़हब की मिट्टी पलीद करें? क्या यह बात अक़ल में आ सकती है? हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ इस ज़माने का मसीह-ओ--महदी बनाकर अवतरित फ़रमाया था। मसीह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के अज़ीमु-श्शान मन्सब पर फ़ायज़ होने की वजह से आप अलैहिस्सलाम ने पूरी ताक़त से ईसाई अक़ायद की ख़राबियां वर्णन फरमाईं और उनकी इस्लाह और राहनुमाई में पूरी क़ुव्वत खर्च कर दी। ऐसे में क्या यह ख़्याल किया जा सकता है कि आप अलैहिस्स-लाम ने अंग्रेज़ों से कोई गठजोड़ किया होगी। और अंग्रेज़ ऐसी सूरत में आप अलै-हिस्सलाम से कोई गठजोड़ कैसे कर सकते हैं जबकि आप अलैहिस्सलाम ने उनके मज़हब की ईंट से ईंट बजा दी। यह असंभव बात थी कि आप से कोई गठजोड़ करें। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

जो लोग नाहक़ ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ हो कर हमारे बुज़ुर्ग नबी हज़रत मुहम्मद मस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुरे शब्दों से याद करते और आँजनाब पर नापाक तोहमतें लगाते और बदज़बानी से बाज़ नहीं आते हैं, इन से हम क्योंकर सुलह करें। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि हम समस्त ज़मीन के साँपों और बयाबानों के भेड़ियों से सुलह कर सकते हैं लेकिन उन लोगों से हम सुलह नहीं कर सकते जो हमारे प्यारे नबी पर जो हमें अपनी जान और माँ बाप से भी प्यारा है नापाक हमले करते हैं। ख़ुदा हमें इस्लाम पर मौत दे, हम ऐसा काम करना नहीं चाहते जिसमें ईमान जाता रहे। (पै-ग़ाम-ए-सुलह, र. ख. भाग 23 पृष्ठ 459)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं हम में और ईसाइयों में कितनी अत्यधिक दूरी है। जिस पाक वजूद को हम तमाम मख़लूक़ात से बेहतर समझते हैं उस को ये झूठा क़रार देते हैं ... जिस हालत में हमारा दीन और हमारी किताब ईसाई धर्म को पूर्णतः नापाक और नजिस समझता है और वाक़ई ऐसा ही है तो फिर हम किस बात पर सुलह करें ... हमारा ईसाइयों से मज़हबी रंग में कुछ भी मिलाप नहीं। (दाफ़े उल बला रूहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 241)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला की ज़ात और उसकी सिफ़ात से ऐसा इशक़ था कि जिसके होते हुए तस्लीस से सुलह एक नामुम-किन बात थी।

★ आप अलैहिस्सलाम ने ईसाइयों के ख़ुदा को क़ुरआन और हदीस की दृष्टि से, अक़ल की दृष्टि से और बाइबल की दृष्टि से, तारीख़ी हक़ायक़ की दृष्टि से देहांत पा चुके हैं साबित कर दिया जिससे कि ईसाइयत की इमारत सहसा गिर कर रह गई क्योंकि ईसाइयत की बुनियाद हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी में ही है। अगर यह साबित हो जाएगा कि हज़रत-ए-ईसा फ़ौत हो गए तो ईसाइयत ख़त्म हो जाएगी। आप अलैहिस्सलाम ने मुस्लमानों को ये सलाह दी कि हज़रत-ए-ईसा अलै-हिस्सलाम को फ़ौत होने दो कि इसी में इस्लाम की ज़िंदगी है। एक ज़माना था कि ईसाई पादरियोंने सिर्फ और सिर्फ ईसी हर्बा से लाखों मुस्लमानों को ईसाई बना लिया कि हज़रत-ए-ईसा आसमान पर ज़िंदा हैं जबकि तुम्हारा मुहम्मद हसल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो कर ज़मीन में मदफ़ून है, बताओ कौन अफ़ज़ल हुआ? मुस्लमानों के पास इसका कोई उत्तर नहीं था, लेकिन इसके बावजूद मुस्लमानों को इस से चिढ़ है कि ईसाइयों के ख़ुदा को मुरदा क्यों कहा जाता है।

★ आप अलैहिस्सलाम ने न सिर्फ हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की वफ़ात साबित की बल्कि उनकी क़ब्र तक का पता चला दिया कि उन की क़ब्र श्रीनगर के मुहल्ला खानियार में है।

★ आप अलैहिस्सलाम ने ऐसे ज़बरदस्त दलायल के साथ ईसाइयों के बुनियादी अक़ीदा तस्लीस की तरदीद फ़रमाई कि ईसाइयत की इमारत अपनी बुनियाद से हिल गई।

★ आप अलैहिस्सलाम ने उनके बुनियादी अक़ीदा कफ़्फ़ारा की भी ऐसे पुरज़ोर दलायल के साथ तरदीद फ़रमाई कि इस अक़ीदा को आप अलैहिस्सलाम ने टुकड़े टुकड़े कर दिया।

★ आप अलैहिस्सलाम ने ईसाई पादरियों से ज़बरदस्त मुनाज़रे किए, उन्हें इस्लाम और क़ुरआन और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ासल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सदाक़त दिखाने के लिए एक से बढ़कर एक चैलेंज दिए किसी पादरी को आप अलैहिस्सलाम के मुक़ाबिल खड़े होने की साहस नहीं था।

★ आप अलैहिस्सलाम ने पादरियों को दज्जाल कहा और न सिर्फ कहा बल्कि साबित करके दिखला दिया कि लोग जिस अजीब-ओ-ग़रीब मख़लूक़ को दज्जाल समझते है, दज्जाल ऐसी कोई मख़लूक़ नहीं बल्कि ईसाई पादरी ही असल में दज्जाल हैं।

★ ईसाई मलिका विक्टोरिया को आप अलैहिस्सलाम ने दावत-ए-इसलाम दी। आप अलैहिस्सलाम ने लिखा "यदि हुज़ूर मलिका मुअज़्ज़मा मेरे तसदीक़ दावा के लिए मुझसे निशान देखना चाहें तो मैं यक़ीन रखता हूँ कि अभी एक साल पूरा नहीं होगा कि वह निशान ज़ाहिर हो जाएगा। और न सिर्फ यही बल्कि दुआ कर सकता हूँ कि यह समस्त समय आफ़ियत और सेहत से व्यतीत हो। लेकिन अगर कोई निशान ज़ाहिर न हो और मैं झूठा निकलूं तो मैं उस सज़ा में राज़ी हूँ कि हुज़ूर मलिका मुअज़्ज़मा के पाया तख़्त के आगे फांसी दिया जाऊं। ये सब केवल इस लिए है कि काश हमारी मुहसिना मलिका मुअज़्ज़मा को इस आसमान के ख़ुदा की तरफ़ ख़्याल आजाए जिससे इस ज़माना में ईसाई मज़हब बे-ख़बर है।" (तोहफ़ा केसरिया, रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 276 हाशिया)

★ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जो भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि आने वाला मसीह सलीब को टुकड़े टुकड़े कर देगा और सूअरों को क़तल करेगा, उस महान भविष्यवाणी के मुताबिक़ सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वास्तव में सलीबी अक़ायद को ऐसे टुकड़े टुकड़े कर दिया कि यह अक़ायद अब जोड़ लगाने योग्य न रहे। सलीब की घटना इस तरह टुकड़े टुकड़े हो गई कि अब कभी जुड़ नहीं सकेगी।

हमारे लिटरेचर में ये सारी बातें निहायत तफ़सील के साथ मौजूद हैं इस लिए हमने केवल इशारा ही किया है। इन हक़ायक़ की मौजूदगी में ये एतराज़ किस क़दर उपहास के योग्य मालूम होता है कि अंग्रेज़ों ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम को खड़ा किया था। क्या अंग्रेज़ों ने आप अलैहिस्सलाम को इस लिए खड़ा किया था कि आप के बुनियादी अक़ाइद को ही जड़ से उखाड़ कर फेंक दें? इन के ख़ुदा को मुर्दा क़रार दें? दलायल-ओ-बराहीन से उनके पादरियों का जीना दोभर कर दें। अतः यह एक इंतेहाई खोखला, कमज़ोर, झूठा, बे बुनियाद और अहमक़ाना आरोप है।

सय्यदना हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम ने ईसाइयों के ख़िलाफ़ जो बड़ा जिहाद किया इसकी एक अदना झलक हमने उपर पेश की है। अगले अंकों में इस ताल्लुक़ से हम आप अलैहिस्सलाम के कुछ इर्शादात पेश करेंगे ताकि यह बात और अच्छी तरह वाज़ेह हो जाएगी कि यह एतराज़ महिज़ एक खोखला, कमज़ोर, झूठा, बे बुनियाद और अहमक़ाना एतराज़ है। (मंसूर मसरूर)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान

29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 9 का शेष

ए-करीम की तालीम है और यही बात सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने कही है कि तुम एक दूसरे का एहतेराम करो और यह कि इन्सान की पैदाइश का असल मक़सद अल्लाह की इबादत है इस लिए आपका जो भी तरीक़ा है जिस मज़हब को भी आप मानते हैं आप इस असल मक़सद के मुताबिक़ अमल करो लेकिन दूसरे लोगों के ख़िलाफ़ ग़लीज़ ज़बान या गाली ग्लोच का प्रयोग न करें। तो अब जब हम इस तारीख़ को लोगों के सामने वर्णन करेंगे। तारीख़ से दिलचस्पी रखने वालों और मज़हब से दिलचस्पी रखने वालों को मालूम होगा कि यह सब कुछ ऐसा ही हुआ।

*इसके बाद जर्नलिस्ट के इस सवाल पर कि आपके मुताबिक़ लोगों पर इस मुबाहला के क्या असरात होंगे?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि हमारा काम इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाना है और इस्लाम कहता है कि देन में कोई जबर नहीं है और आप किसी को अपना मज़हब तबदील करने पर मजबूर नहीं कर सकते और जो लोग इस्लाम क़बूल नहीं करते वे कम अज़ कम ये समझ लेंगे कि इस्लाम हमें एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहने और अपने फ़राइज़ अदा करने का कहता है। बांई सिलसिला अहमदिया ने कहा कि मेरे आने का मक़सद लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाना और अल्लाह तक पहुंचाना है उन्हें यह समझाना है कि अल्लाह की इबादत कैसे करनी है और अल्लाह की इबादत क्यों करनी है और अपने ख़ालिक़ के सामने झुकना है और दूसरा मक़सद लोगों को एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने का एहसास दिलाना है लोगों को एक दूसरे का एहतराम करना चाहिए। उन्हें एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करना चाहिए और यही बात क़ुरआन-ए-करीम सिखाता है और यही हम मानते हैं और यही है जिसकी हम तब्लीग़ करते हैं।

* फिर जर्नलिस्ट ने आख़िरी प्रशन यह किया कि क्या अब दुनिया में organized religion अर्थात मुनज़्ज़म मज़हब का कोई किरदार है क्या मज़हब अमन की आवाज़ बन सकता है?

इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम कहते हैं कि दीन का उद्देश्य किसी को डराना नहीं है जैसा कि मैं पहले आपको बता चुका हूँ कि सिलसिला अहमदिया के संस्थापक दो उद्देश्यों के लिए दुनिया में ज़ाहिर हुए और आपने इस्लाम की हक़ीक़ी तालीमात को ज़िंदा करने का दावा किया और यह तालीम दो उसूलों पर मुश्तमिल है हुक़ूकुल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद। इसलिए अगर आप इन दोनों फ़रायज़ को जानते हैं तो फिर हम से डरने की ज़रूरत नहीं। हम ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हैं। हम जिसकी तब्लीग़ करते हैं इस पर अमल करते हैं हम इस किस्म के जुनूनी मुल्ला, शरपसंद नहीं हैं जो समाज की शांति ख़राब कर रहे हैं।

हम कहते हैं कि हमें अमन से रहना चाहिए और हमें एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए। यहां तक कि क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि तुम एक दूसरे के मज़हब का एहतराम करो। क़ुरआन-ए-करीम यह भी कहता है कि तुम बुत परस्तों के ख़िलाफ़ कोई बदज़बानी भी न करो क्योंकि वह इंतेक़ाम में अल्लाह के ख़िलाफ़ वही ज़बान प्रयोग करेंगे। इसलिए डरने की ज़रूरत नहीं है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : जहां तक मस्जिद का उद्देश्य है और हम किस तरह रहते हैं हम यहां क्या करने जा रहे हैं में अपने ख़िताब में भी वर्णन करूँगा।

यह इंटरव्यू 6 बजकर 20 मिनट पर ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के मुताबिक़ फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ।

फ़ैमिली मुलाक़ातें

आज शाम के सैशन में 23 फ़ैमिलीज़ के 152 अफ़राद ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का शरफ़ पाया। इन सभी अफ़राद ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई। हुज़ूर अनवर ने अज़राह-ए-शफ़क़त तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चीयों को चॉकलेट अता फ़रमाए। आज ज़ाइन (zion) की जमाअत के इलावा indiana oshk osh chicago mil-wauk ee iowa seattle si licon valley की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ ने भी शरफ़ मुलाक़ात पाया। बाअज़ फ़ैमिलीज़ बड़ा लम्बा सफ़र तै कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं। सयाटिल से वालेला 2014 मील और सिलीकोनवैली से आने वाली फ़ैमिलीज़ 2190 मील का सफ़र तै कर के आई थीं। मुलाक़ातों का प्रोग्रा 8 बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

(शेष आगे ...)

रिपोर्ट : आदरणीय अदुल माजिद ताहिर साहिब
(ऐडीशनल वकीलअल्-तिबशीर् लंदन, यू.के)
(अख़बार बदर उर्दू 13 अक्तूबर 2022)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

संक्षिप्त तारीख़ जमाअत अहमदिया अमरीका

जमाअत अहमदिया अमरीका की तारीख़ में साल 1920 को एक ख़ास एहमियत हासिल है जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के इरशाद पर लंदन से हज़रत डाक्टर मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो अमरीका के पहले मुबल्लिग़ के तौर पर 26 जनवरी 1920 को बर्तानिया की बंदरगाह liverpool से रवाना हुए और 21 दिन के सफ़र के बाद 15 फ़रवरी 1920 ई. को अमरीका की बंदरगाह फ़लाडलाफ़ीया पर उतरे लेकिन आपको मुल्क के अंदर दाख़िल होने से रोक दिया गया और फ़ैसला किया गया कि आप जिस जहाज़ में आए हैं इसी में वापस चले जाएं। हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस फ़ैसला के ख़िलाफ़ महकमा आबाद कारी वाशिंगटन में अपील की। इस पर आपको समुंद्र के किनारे एक मकान में बंद कर दिया गया और क़ैद कर दिया गया। इस मकान से बाहर निकलने की सहायता थी। परन्तु छत पर टहल सकते थे उस का दरवाज़ा दिन में सिर्फ दो मर्तबा खुलता था।

इस मकान में कुछ यूरोपीयन भी नज़रबंद थे। हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने अवसर से फ़ायदा उठा कर अपने साथी क़ैदियों को तब्लीग़ करनी शुरू कर दी जिसके नतीजा में दो माह के अंदर पंद्रह क़ैदियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया।

अमरीका की सरज़मीन पर बैअत करने वाले पहले अहमदी का नाम Mr. r.i.roch-ford था इसके इलावा बैअत करने वालों का ताल्लुक़ जमैका ब्रिटिश गयाना, पोलैंड, रशिया, जर्मनी azores बलजीयम, पुर्तगाल, इटली और फ़्रांस से था।

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो को जब यह इत्तिला मिली कि हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को अमरीका में क़ैद कर दिया गया है तो आपने अमरीकी हुकूमत के इस रवैय्या पर सख़्त अफ़सोस का इज़हार करते हुए फ़रमाया "अमरीका जिसे ताक़तवर होने का दावा है इस वक़्त तक उसने माद्दी सल्तनतों का मुक़ाबला किया और उन्हें शिकस्त दी होगी। रुहानी सलतनत से इस ने मुक़ाबला कर के नहीं देखा। अब अगर उसने हमसे मुक़ाबला किया तो उसे मालूम हो जाएगा कि हमें वह हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता क्योंकि ख़ुदा हमारे साथ है। हम अमरीका के इर्दगिर्द के इलाक़ों में तब्लीग़ करेंगे और वहां के लोगों को मुस्लमान बना कर अमरीका भेजेंगे और उनको अमरीका नहीं रोक सकेगा। और हम उम्मीद रखते हैं कि अमरीका में एक दिन لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ की सदा गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।

मई 1920 में अमरीकी हुकूमत की तरफ़ से हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो से पाबंदी उठा ली गई जिसकी फ़ौरी वजह यह बनी कि ऐसा न हो कि आप नज़रबंद समस्त क़ैदियों को मुस्लमान बना लें। इसलिए हुक्काम ने आपके अमरीका में दाख़िल होने का फ़ैसला कर दिया। हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने न्यूयार्क में एक मकान किराए पर लेकर जमाअत के मिशन का आगाज़ किया। फिर 1921 ई. में आप शिकागो मुंतक़िल हो गए और बाक़ायदा एक इमारत ख़रीद कर जमाअती मर्कज़ क़ायम किया। यह मकान बतौर मिशन हाऊस, रिहायश और बतौर मस्जिद प्रयोग होता था जुलाई 1921 ई. में आपने उसी मिशन हाऊस से जमाअत अमरीका के रिसाला muslim sunrise का इजरा किया। यह रिसाला आज भी बाक़ायदगी से शाय हो रहा है।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अमरीका के समस्त बड़े शहरों और प्रत्येक स्टेट में अहमदिया जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं। अमरीका में वक़्त 58 मुक़ामात पर मुस्तइद और फ़आल जमाअतें क़ायम हो चुकी हैं 56 मसाजिद और 60 मिशन हाऊसज़ हैं। बाअज़ मुक़ामात पर बड़ी वसीअ-ओ-अरीज़ इमारतें और मसाजिद तामीर की गई हैं। नई मसाजिद और मिशन हाऊसज़ की तामीर का सिलसिला मुसलसल जारी है।

यह वही है जहां 1920 में जमाअत अहमदिया के पहले मुबल्लिग़ हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब रज़ियल्लाहु अन्हो को मुल्क के अंदर दाख़िल होने से रोक दिया गया था और आपको क़ैद कर दिया गया था। इस वक़्त हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया था कि "अमरीका हमें हरगिज़ शिकस्त नहीं दे सकता अमरीका में एक दिन لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ की सदा गूँजेगी और ज़रूर गूँजेगी।"

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सारे अमरीका में गांव गांव शहर शहर अहमदी आबाद हैं और अमरीका के चप्पा चप्पा पर दिन रात لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ की सदा गूंज रही साल 2020 ई. में जमाअत अमरीका के क़ियाम पर सौ साल मुकम्मल हुए हैं और जमाअत अमरीका अपनी सद साला जुबली मना रही है और जमाअत की मुख़्तलिफ़ तक़रीबात और प्रोग्राम जारी हैं।

जान अलेक्जेंडर डोवी के शहर zion में मस्जिद फ़तह अज़ीम की तामीर भी अमरीका की सद साला जुबली की तक़रीबात का एक अत्यधिक अहम प्रोग्राम है। इस का उद्घाटन इन शा अल्लाह इस दौरा में होगा जहां उसकी मुकम्मल तफ़सील दर्ज की जाएगी।

हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ज़ायन की सरज़मीन से शुरू होने वाला यह दौरा अत्यधिक ग़ैरमामूली बरकतों और कामयाबियों का हामिल दौरा है और उसके नतीजा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया की अज़ीमुश्शान प्रगतियों और फ़ुतूहात के नए दरवाज़े खुलने वाले हैं और जमाअत अहमदिया अमरीका कामयाबियों के एक नए दौर में दाख़िल होने वाली है और यही तक़दीर-ए-इलाही है जो ज़ाहिर हो रही है।

27 सितंबर 2022-ए- (मंगल के दिन)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बजकर 50 मिनट पर मस्जिद फ़तह अज़ीम में तशरीफ़ ला कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मुख़्तलिफ़ दफ़्तरी उमूर की अदायगी में मसरूफ़ियत रही।

मुआइना नुमाइश

इसके बाद प्रोग्राम के मुताबिक़ दोपहर एक बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद फ़तह अज़ीम से जुड़ी नुमाइश हाल में तशरीफ़ ला कर नुमाइश का मुआइना फ़रमाया। इस नुमाइश को निम्नलिखित 10 हिस्सों में तक़सीम किया गया है।

अल्लाह तआला, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और इस्लाम, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, क़ुरआन-ए-करीम और तराजुम, इमाम महदी के बारे में जुमला मज़ाहिब की भविष्यवाणी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दआवी और निशानात, डाक्टर इलैगज़ेंडर डोई शदीद मुआनिद इस्लाम और उसकी इस्लाम दुश्मनी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पुर मआरिफ़ जवाब और दावत मुबाहला, डाक्टर डोई का उरूज और इबरतनाक अंजाम, फ़तह अज़ीम का जारी सफ़र।

इन समस्त दस मज़ामीन को इलेक्ट्रिक रूप में प्रत्येक हिस्सा में एक बड़ी टी.वी स्क्रीन video looping के ज़रीया ज़ाहिर किया गया है। प्रत्येक हिस्सा में टी.वी स्क्रीन के नीचे शीशे के एक showcase में इस हिस्सा के मज़मून के मुताल्लिक़ जुमला नवादिरात रखे गए हैं। इस नुमाइश में जो अहम अश्याय रखी गई हैं इन में डाक्टर डोई के सौ साल पुराने नवादिरात की तसावीर, रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ के वे इबतिदाई शुमारे रखे गए हैं जिन में डाक्टर डोई को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चैलेंज दिया था और इस की हलाकत के बारे में भविष्यवाणी फ़रमाई थी। यह 1902 ई., 1905 ई. और 1907 ई. के शुमारे हैं।

डाक्टर डोई के रिसाले "leaves of healing" के वे शुमारे भी रखे गए हैं जिनमें इस ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में गंद उछाला था। ये शुमारे इसलिए रखे गए हैं ताकि यह बताया जाए कि डाक्टर डोई के इस बुग़ज़-ओ-इनाद के मुक़ाबला में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ को हथियार के तौर पर पेश किया। 1902 ई. और 1903 ई. के वे असल अख़बारात भी रखे गए हैं जिनमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ वे चैलेंज भी रक़म है जो आप ने डोई को संबोधित करते होते हुए दिया था। अख़बारात में library digest और तीन मज़ीद अख़बारात शामिल हैं।

अख़बार boston herald सफ़ा बड़ा कर के 5X7 फुट के साइज़ में दीवार पर आवेज़ां किया गया है जिसकी सुरख़ी (headline)निमंलिखित है "great is mirza ghulam ahmad" हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सैक्शन में हुज़ूर अलैहिस्सलाम का एक कोट भी शीशे के शोकेस में रखा गया है जो आप अलैहिस्सलाम ज़ेब-ए-तन फ़रमाते थे।

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में ग़ैरों की आरा में एक काबिल-ए-ज़िक्र emperor ming हैं जिन्हों ने 1573 ई. में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में एक चाइनीज़ ज़बान के अलफ़ाज़ पर मुश्तमिल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मदह में नज़म लिखी है जो चीन के देश में अढ़ाई हज़ार मसाजिद में मौजूद है इस का अंग्रेज़ी अनुवाद पेश किया है।

अख़बार boston herald के 28 जून 1907 ई. के शुमारा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तस्वीर के साथ हज़ूर दीगर पेशगोइयों का वर्णन है जिनमें ज़लाज़िल, दमदार सितारा और चांद सूरज गरहन और ताऊन इत्यादि शामिल हैं। इन सब

के अख़बारी नुस्ख़ाजात showcase में रखे गए हैं।

नुमाइश की एक अत्यधिक अहम चीज़ kiosk है जिसमें 160 अख़बारी तराशे जमा किए गए हैं और world map के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को touch करने से ये समस्त तराशाजात 60 इंच की टीवी स्क्रीन पर वाज़िह हो जाते हैं और साफ़ पढ़े जाते हैं। ये समस्त तराशा जात 1902 ई. से लेकर 1909 की दहाई में अमरीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, बर्तानिया, असकाट लैंड और इंडिया के अख़बारों में शाय हुए थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान kiosk को launch किया और डाक्टर डोई के ज़िक्र, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी और डोई के इबरतनाक अंजाम के हवाला से मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के अख़बारात का मुशाहिदा किया। जिनमें alaska nebraska न्यूयार्क और बोस्टन इत्यादि के अख़बार शामिल थे।

नुमाइश में दीवार पर जो मुख़्तलिफ़ टीवी स्क्रीन लगाए गए हैं उनमें एक टी.वी स्क्रीन पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह के14 तराशे ख़ुदबख़ुद मंज़र-ए-आम पर आते हैं और मुख़्तलिफ़ देशों में शाय होने वाले अख़बारात चंद मिनटों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़तह और तसदीक़ का ऐलान कर रहे होते हैं।

एक टी.वी स्क्रीन 20 अख़बारात के वे तराशे हैं जिनमें हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के डोई को दीए जाने वाले मुबाहला, चैलेंज का वर्णन है। ये तराशे टी.वी स्क्रीन पर बग़ैर कोई बटन दबाए या टीवी स्क्रीन को touch किए तबदील होते हैं। टी.वी स्क्रीन के सामने हाथ हिला कर इशारा करें तो अगला तराशा जाता है। इस तरह सिर्फ हाथ के इशारा से जो तराशा भी आप देखना चाहते हैं वे आपके सामने आ जाएगा।

एक टी.वी स्क्रीन पर हाथ के इशारा से बदलते हुए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वे इक़तेबासात हैं जिनमें ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ के बारे में तालीमात वर्णन की गई हैं। एक कालम पर newyork times की वे इबारत दर्ज है जिसका अनवान rival prophets है। इस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पुरज़ोर अलफ़ाज़ में डोई को चैलेंज दिया है।

जिस showcase में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कोट आवेज़ां है इस के ऊपर दीवार पर यह दर्ज है "बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँडेंगे"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नुमाइश के मुआइना के दौरान डोई के नवादिरात देख कर फ़रमाया कि मूसा के ज़माने में फ़िरऔन था जिसकी mummy को महफ़ूज़ किया गया। आज (डोई के) इन नवादिरात को महफ़ूज़ कर के आपने इस निशान को महफ़ूज़ कर लिया है।

नुमाइश का एक हिस्सा क़ुदरत सानिया के हवाला से तैयार किया गया था कि हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़िलाफ़त अहमदिया के ज़रीया जमाअत अहमदिया मुसलसल तरक़्क़ी कर रही है तो दूसरी तरफ़ डोई और उसकी जमाअत का वजूद हमेशा के लिए ख़त्म हो चुका है। showcase में खलिफ़ा की बाअज़ कुतुब रखी गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यह कुतुब देखकर फ़रमाया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो और ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो की कुतुब भी शामिल करें।

चांद सूरज गरहन के हवाला से पुराने अख़बारात के तराशे रखे गए थे 1895 ई. के अख़बारी तराशे देखकर हुज़ूर ने फ़रमाया कि मग़रिब के लिए 1895 ई. में ग्रहण लगा था और अहल-ए-मशरिक़ के लिए 1894 ई. में ग्रहण लगा था।

नुमाइश के आख़िरी हिस्सा में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की रोया "ग़ुलाम अहमद की जय" को स्क्रीन पर दिखाया गया था। और तबर्रुकात को ज़ाहिर किया गया था। हुज़ूर अनवर ने उसे देखकर फ़रमाया कि "मेरे हाथ में भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दो तबर्रुकात हैं" हुज़ूर अनवर ने अपने हाथ में पहनी हुई दोनों अँगूठीयों "الیس اللہ بکافٍ عبدہ' और "मौला बस" की तरफ़ इशारा किया।

इस नुमाइश का मुकम्मल इंतेज़ाम आदरणीय अनवर महमूद ख़ान साहब नैशनल सैक्रेटरी तहरीक-ए-जदीद और उनकी टीम ने बड़ी मेहनत से किया। आख़िर पर इस टीम के मैंबरान ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तसावीर बनवाने की सआदत पाई।

मस्जिद फ़तह अज़ीम की तख़्ती की निक़ाब कुशाई और मीनार का संग-ए-बुनियाद

नुमाइश के मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की बैरूनी दीवार पर लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मीनारा का संग-ए-बुनियाद रखा। शहर की इंतेज़ामिया की तरफ़ से मस्जिद के साथ मीनारतुल मसीह की तर्ज़ पर एक मीनारा तामीर करने की भी मंज़ूरी मिली है। इस की उंचाई 70 फ़ुट होगी।

मस्जिद फ़तह अज़ीम और इस से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर को एक नक़्शा की सूरत में बोर्ड पर आवेज़ां किया गया था। हुज़ूर अनवर ने यह नक़शाजात देखे। आदरणीय फ़लाहउद्दीन शमस साहिब नायब अमीर यू. एस. ए. ने इस प्राजैक्ट के हवाला से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में मुख़्तलिफ़ उमूर अर्ज़ किए और बताया कि हमारे इस क़ता ज़मीन का कुल रकबह 10 एकड़ है जिसमें से इस वक़्त अढ़ाई एकड़ ज़ेर-ए-इस्तेमाल है। मस्जिद और दफ़ातिर की तामीर है गेस्ट हाऊस की तामीर है एक वसीअ पार्किंग एरिया बनाया गया है और इसी अढ़ाई एकड़ रकबा में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मारकीज़ भी लगाई गई हैं।

हुज़ूर अनवर ने दरयाफ़त फ़रमाया कि जो बाक़ी साढ़े सात एकड़ रकबा है वह इस नक़्शा के मुताबिक़ किस तरफ़ है तो इस पर मौसूफ़ ने इस हिस्सा की निशानदेही करते हुए बताया कि इस तरफ़ है और इस रकबा पर दरख़्त लगे हुए हैं। हुज़ूर अनवर ने पार्किंग एरिया के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया तो अर्ज़ किया गया कि मस्जिद के पार्किंग एरिया में 95 गाड़ियां आ सकती हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने मस्जिद से मुल्हिक़ा हाल और दफ़ातिर का मुआइना फ़रमाया। नुमाइश हाल के इलावा लाइब्रेरी है। दफ़ातिर में, दफ़्तर सदर जमाअत और लजना के दफ़ातिर शामिल हैं। चिल्डर्न क्लास के लिए भी एक कमरा मुहय्या किया गया है। आडीयो वीडीयो रुम भी है और एक लांडरी रुम भी बनाया गया है। लिफ़्ट की सहूलत भी मुहय्या की गई है। दो स्टोरेज रूमज़ भी हैं।

हुज़ूर अनवर फ़्लोर (basement) में भी तशरीफ़ ले गए जहां एक मल्टी परपज़ हाल (multi purpose hall) तामीर किया गया है। जिसका रकबा 2451 मुरब्बा फुट है। इस वक़्त उसे नमाज़ की अदायगी के लिए प्रयोग किया जा रहा है। इस हाल में 300 अफ़राद नमाज़ अदा कर सकते हैं। इस हाल में मर्दों और औरतों के लिए अलैहदा अलैहदा वाश रूमज़ बनाए गए हैं और कमर्शीयल किचन भी मौजूद है।

मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर-ओ-अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

रीलीजन न्यूज़ सर्विस की सहाफ़ी का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू :

रीलीजन न्यूज़ सर्विस (religion news service) की एक सहाफ़ी emily miller हुज़ूर अनवर का इंटरव्यू करने के लिए आई हुई थीं। मौसूफ़ा के अमरीका में लाखों फालोवरज़ हैं। ये सहाफ़ी ख़ातून मस्जिद फ़तह अज़ीम के पस-ए-मंज़र और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और डाक्टर डोई के दरमयान मुबाहला पर एक मज़मून लिख रही हैं।

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नुमाइश हाल में तशरीफ़ लाए जहां इंटरव्यू का प्रोग्राम था।

* इंटरव्यू के आग़ाज़ में जर्नलिस्ट ने पहला सवाल यह किया कि इस मस्जिद के उद्घाटन के लिए हुज़ूर का यहां आना क्या एहमियत रखता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम जहां भी मस्जिद बनाते हैं उमूमन वहां की जमाअत मुझ से पूछती है कि क्या मेरा वहां आना मुम्किन है? जर्मनी हो या बर्तानिया हो या कोई और हो। covid से पहले मैं मसाजिद के उद्घाटन के लिए जाया करता था लेकिन यहां zion में एक ख़ास चीज़ है जैसा कि आपने नुमाइश में भी देखा है तो यह भी मुख़्तलिफ़ वजूहात में से एक वजह है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मैं आम तौर पर मसाजिद का उद्घाटन करता हूँ और वहां अपनी जमाअत के अफ़राद से मिलता हों। इस तरह उनकी हौसला-अफ़ज़ाई होती है और मैं उन्हें नसाएह करता हूँ और बताता हूँ कि मस्जिद की तामीर का मक़सद किया है। यह न हो कि आप सिर्फ उसको आरिज़ी तौर पर या कुछ ख़ास होने की वजह से मनाएं बल्कि असल यह है कि हमारी ज़िंदगी और हमारे दीन का मक़सद अल्लाह तआला की इबादत करना है मसाजिद इसी मक़सद के लिए तामीर की जाती हैं और मैं अपने लोगों को याद दिलाता हूँ कि उन्हें सिर्फ मस्जिद की तामीर पर ख़ुश नहीं होना चाहिए बल्कि उन्हें हक़ीक़त में यह एहसास होना चाहिए कि उनकी ज़िंदगी का मक़सद क्या है, तो इस तरह उनकी राहनुमाई होती है और फिर वे अपने आप में तबदीलीयां पैदा करते हैं और समझते हैं कि उनके फ़रायज़ और ज़िम्मेदारियाँ क्या हैं।

*जर्नलिस्ट ने दूसरा सवाल किया कि इस मस्जिद का नाम फ़तह अज़ीम है इस से क्या मुराद है? फ़तह किस की है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : अगर आप ये नुमाइश देखी तो आपको समझ आएगी कि मसीह मुहम्मदी और तथाकथित मसीह का मुक़ाबला कैसे शुरू हुआ, इसलिए यही दुआओं का मुक़ाबला था जिसका ऐलान सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने किया। पहले आप ने डोई को नसीहत की कि तुम अम्बिया और मुक़द्दस लोगों के ख़िलाफ़ ये ग़लीज़ ज़बान न प्रयोग करो लेकिन वे आपके ख़िलाफ़ बदज़ुबानी करता रहा। यहां तक कि इस ने कह दिया कि मैं दुआ करूँगा कि पूरी उम्मत मुस्लिमा और प्रत्येक मुस्लमान तबाह हो जाएँ। इस पर जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने फ़रमाया कि पूरे मज़हब को तबाह करने के बजाए हम दो लोग हैं इसलिए एक दूसरे के ख़िलाफ़ दुआ करते हैं। और फिर दुआओं का मुक़ाबला शुरू हो गया था और ख़ुदा तआला ने आपको बताया कि इस मुबाहला में फ़तह तुम्हारी होगी और फिर बिलआख़िर ऐसा ही हुआ। तो "फ़तह अज़ीम" का यह नाम आपको अल्लाह तआला ने बताया था। इसलिए जब हमने ये मस्जिद बनाई तो जमाअत ने इस का नाम रखने की दरख़ास्त की तो इस पर मैंने कुछ नाम तजवीज़ किए और जमाअत से कहा कि कोई ऐसा नाम मुंतख़ब करें जिसको अमरीका के बाशिंदे आसानी से बोल सकते हूँ लेकिन मुक़ामी जमाअत ने इसरार किया कि यह नाम "फ़तह अज़ीम" इस मस्जिद के लिए मुनासिब है फिर मैंने उसकी मंज़ूरी दी तो इस तरह इस मस्जिद का नाम "फ़तह अज़ीम" रखा गया।

*फिर जर्नलिस्ट ने सवाल किया कि अमरीका के बाशिंदों के लिए इस मुबाहला का वाक़िया जानना क्यों ज़रूरी है?

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यह केवल अमरीका के बाशिंदों के लिए ही अहम नहीं है बल्कि यह सब के लिए अहम है। प्रत्येक अमरीकी तारीख़ में दिलचस्पी नहीं रखता लेकिन कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बहुत शौक़ीन हैं वे सोचते हैं कि उन्हें अपने मुल्क में रहने वाले मुख़्तलिफ़ लोगों की तारीख़ और मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और उनके पस-ए-मंज़र के बारे में जानना चाहिए। इस लिए जो लोग दिलचस्पी रखते हैं वह यहां आएं और हमारी तारीख़ जानें और यह कि किसी एक मज़हब की फ़तह नहीं है दरअसल लोगों को यह बताने की फ़तह है कि ख़ुदा का सच्चा बंदा कौन है और यह कि एक दूसरे के ख़िलाफ़ कोई गाली ग्लोच नहीं करनी चाहिए। हमें समस्त मज़ाहिब का एहतिराम करना चाहिए। यही क़ुरआन-

शेष पृष्ठ 9 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 28 SEPTEMBER 2023 Issue No. 39

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

"मुझ को काफ़िर कह के अपने कुफ़्र पर करते हैं मोहर
यह तो है सब शक्ल उनकी हम तो हैं आईना दार"
(हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद और मह्दी माहूद अलैहिस्सलाम की कविता)

जमाअत अहमदिया मुस्लिमा पर अख़बार मुंसिफ़ हैदराबाद के आरोपों का उत्तर (भाग - 2)

पिछले दिनों आंधरा प्रदेश राज्य के वक़्फ़ बोर्ड की तओर से जमाअत अहमदिया मुस्लिमा को काफ़िर और ग़ैर मुस्लिम क़रार दिए जाने पर अल्पसंख्यक मामले की केंद्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने वक़्फ़ बोर्ड को सचेत किया कि वक़्फ़ बोर्ड का यह काम नहीं कि वह किसी को काफ़िर क़रार दे। इस पर मुख़्तलिफ़ अख़बारात ने वक़्फ़ बोर्ड के समर्थन में और जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ बहुत कुछ लिखा। अख़बार लेखक हैदराबाद अपने 25 जुलाई के संपादकीय में और इसी तरह जमई उल्मा हिंद ने अपने प्रैस रीलीज़ में बानी जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद मह्दी मौऊद अलैहिस्सलाम पर जो आरोप लगाए उन आरोपों को हम पिछले अंक में प्रकाशित कर चुके हैं। और हमने कहा था कि हम इन समस्त आरोपों का तरतीबवार तफ़सील के साथ उत्तर देंगे। पहले हम अख़बार लेखक हैदराबाद के आरोपों का उत्तर देते हैं। अख़बार के लेखक ने लिखा कि :

★ "जमईअत उल्मा-ए-हिंद, जमाअत-ए-इस्लामी, जमई अहल-ए-हदीस, सुन्नी उल्मा कौंसल और ख़ासकर मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड पर यह ज़िम्मेदारी डाली जाती है कि वे मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी और उसके मानने वालों के अन्य धर्मों के ताल्लुक़ से एतेक़ादात और माज़ी में अंग्रेज़ों के साथ मिलकर की गई साज़िशों से वाक़िफ़ करवाएं"।

जमाअत अहमदिया और जमात अहमदिया के संस्थापक के अन्य धर्मों के संबंध में क्या एतिक़ादात हैं , इसी तरह जमात अहमदिया या बानी जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद मह्दी मौऊद अलैहिस्सलाम ने अंग्रेज़ों के साथ मिलकर कौन सी साज़िश रची थी? इस बारे में संपादक ने कोई रोशनी नहीं डाली ताकि हम इन बातों का उत्तर दे सकते। अब ऐसी गोल मोल बातों का हम क्या उत्तर दें। हर इंसाफ पसंद और अक़्लमंद इन्सान ऐसी गोल मोल बातों से विमुखता का इज़हार करेगा जिस में झूठ का अंदेशा हो और बात स्पष्ट रूप में वर्णन न की गई हो ।

अन्य धर्मों के विषय में हमारा यह एतेक़ाद है कि सब मज़ाहिब अल्लाह तालाकी तरफ़ से हैं लेकिन लंबा समय गुज़रने की वजह से उनमें ख़राबियां पैदा हो गईं और वह इन्सानी हस्तक्षेप का शिकार हो गए। क़ुरआन की तालीम के मुताबिक़ हर क़ौम--ओ-मज़हब में अल्लाह तआला की ओर से नबी और रसूल आए जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है। وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُوْلٌ (यूनुस : 48) और फ़रमाता है وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ (अल् राद : 8) क़ुरआन-ए-करीम के इस उसूली फ़रमान की रोशनी में हम राम और कृष्ण को अल्लाह के नबी मानते हैं। पहले हमारे इस अक़ीदा को ग़ैर अहमदी हज़रात बहुत ही बुरा और इस्लाम के ख़िलाफ़ समझते थे लेकिन अब उन्ही के अंदर से आवाज़ें आने लगी हैं कि यह भी अल्लाह के पैग़ंबर गुज़रे हैं। इसी तरह अब यह जिहाद के विषय में भी हमारे नज़रिया से सहमत नज़र आते हैं। पहले तो कहते थे कि काफ़िरों से हर हाल में जिहाद फ़र्ज़ है लेकिन अब उन्हें ऐसा कहने का साहस नहीं है अब यह एक थाली में खाने की बातें करते हैं। चलो देर से सही लेकिन उन्हें बहर हाल एक दिन हमारे पीछे आना ही होगा। इस्लाम हमें सिखाता है कि हर मज़हब और उनके बुज़ुर्गों और संस्थापकों की इज़्ज़त की जाए और हिक्मत और मुहब्बत के साथ उन तक इस्लाम का संदेश पहुंचाया जाए। ग़ैर मज़ाहिब के विषय में हमने अपना नज़रिया इख़तेसार के साथ वर्णन कर दिया है।

अब रहा अंग्रेज़ों के साथ मिलकर साज़िश रचने का इल्ज़ाम तो जैसा कि हमने अर्ज़ किया इस बारे में संपादक ने कोई रोशनी नहीं डाली कि वह कौन सी साज़िश थी, कैसी साज़िश थी? अगर वाक़ई कोई साज़िश थी तो उस के विषय में कई बातें मंज़र-ए-आम पर आई होंगी। अख़बार मुंसिफ़ के मुदीर को कुछ तो अपने पाठकों को बताना चाहिए था या सारा कुछ उन्होंने पाठकों पर ही छोड़ रखा है कि ख़ुद ही तहक़ीक़ करते फिरें? हक़ीक़त यह है कि यह एक इंतेहाई झूठा और बे-बुनियाद आरोप है।

कहा यह जाता है कि अंग्रेज़ों ने मुस्लमानों की ध्यान और उनकी तवज्जा को हटाने के लिए मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी को खड़ा किया और कहा कि तुम नबुव्वत का दावा करो ताकि मुस्लमान हमारी मुख़ालेफ़त छोड़ कर तुम्हारे पीछे लग जाएं और हम कुछ राहत की सांस ले सकें। यह अत्यधिक अनुचित आरोप है और झूठ के सिवा कुछ भी नहीं। अगर इस एतराज़ में कोई हक़ीक़त होती तो यक़ीनन कुछ न कुछ हक़ायक़ को सबूतों के साथ पेश करना कोई मुश्किल काम नहीं था। लेकिन हम देखते हैं कि इस के संबंध में कोई भी बात सबूत के साथ पेश नहीं की जाती। बहर हाल हमें अफ़सोस के साथ लिखना पड़ता है कि जिस तरह उनके पूर्वज मौलवी सनाउल्लाह अमृतसरी, मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मुख़ालिफ़त में पूरी ज़िंदगी झूठ बोलते रहे यही पेशा अब उन्होंने अपना रखा है। बात यह है कि लोगों के सामने झूठ पेश करना उनकी मजबूरी है। अगर यह सच्च वर्णन करें तो उनको पता है कि लोग अहमदियत की तरफ़ मायल हो जाएंगे। लेकिन सच्च समय समय पर उनकी ज़बान पर आही जाता है। एक मौलाना ने यू टियूब पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का फ़ारसी मंजूम कलाम बहुत ही झूम-झूम कर और मज़े ले लेकर पढ़ा और इस का उर्दू अनुवाद सुनाया,और बताया आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में यह कमाल का मंजूम कलाम है। एक मौलवी

पृष्ठ 8 पर

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj.

اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا — اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और विल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें,
इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन
ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad